Chap-1

प्रथम अध्याय

जीवन तथा रचनाओं का संक्षिप्त परिचय

1. जीवन परिचय जन्म
2. शिक्षा-दीक्षा
3. साहित्यिक विकास
4. कृतित्व
   - (अ) उपन्यास
   - (ब) कहानी
   - (स) संस्मरण एवं रेखाचित्र
   - (द) बाल साहित्य

जीवन तथा रचनाओं का संक्षिप्त परिचय

जन्म –

शिवानी जी का जन्म सौराष्ट्र के राजकोट नगर में 17 अक्टूबर 1923 (विजय दशमी) को प्रातःकाल में हुआ था। उनका परिवार अत्यन्त संस्कारवान उच्चवर्गीय एवं समृद्ध था इसलिए परिवार के सभी गुण उनमें भी समाविष्ट हुए थे। शिवानी जी के पिता श्री अश्विनी कुमार पाण्डे राजकोट के राजकुमार कॉलेज में प्रोफेसर थे। राजकोट के पश्चात् वे जुनागढ़, माणविदर, रामपुर जसदन, ओरछा, दतिया आदि राजघरानों के राजकुमारों के पारिवारिक विद्यागुरू रहे। अग्रेज कलक्टर व कमिश्नरों के साथ उनकी दोस्ती भी थी। इसी कारण वे रामपुर के गृहमंत्री के पद पर भी नियुक्त हुए थे।

शिवानी की माताजी का नाम लीलावती पाण्डे था। वे भी बहुत शिक्षित व विदुषी थी उनके घर में एक समृद्ध पुस्तकालय था। जिनमें हिन्दी, गुजराती और संस्कृत की कई पुस्तके थी। झवेर चंद मेधाणी उनके प्रिय लेखक थे। शिवानी की माताजी धार्मिक एवं आधुनिक समाज के प्रति जागरूक थी। महिलाओं के शिक्षण और उनकी प्रगति के लिए प्रयासरत रहती थी। इसके परिणाम स्वरूप लखनऊ का कॉलिज उनके योगदानो से बना था। चौबिस वर्षीय पुत्री और जामाता की नैनीताल के ताल में डूब जाने से मृत्यु हो गई इस बात से शिवानी के पिता बहुत शोक

विहवल हो उठे सिलोन की यात्रा के दौरान ही वे बिमार हुए और शीघ्र ही वे कालकवलित हो गये।

शिवानी के नाना डॉय हरदत पन्त लखनऊ के तत्कालीन ख्याति प्राप्त सिविल सर्जन थे। उनके नाना ने अपने अस्पताल को एक छोटी सी झोपड़ी से शुरू किया था। जो आज भी बलरामपुर के नाम से सुविदित है। नाना की भाँति नानी भी लखनऊ के सामाजिक जीवन में बहुचर्चित थी। कुँमाऊ समाज की दागबोल उन्हों ने डाली थी।

शिवानी के पितामह काशी विश्वविद्यालय में धर्म प्रचारक के पद पर थे, साथ ही वे संस्कृत के विद्वान और एक सफल वकील भी थे। शिवानी और उनके भाई-बहनों को भी अच्छी शिक्षा दिलवाई गई थी। उनके बड़े भाई त्रिभुवन की शिक्षा अँग्रेज गवर्नेस मिस ममवर्ड की देखरेख में हुई थी। बड़ी बहन जयन्ती शांतिनिकेतन भेज दी गई थी वही उनके साथ शिवानी को भी भेज दिया गया। उनकी बड़ी बहन जयन्ती अनुशासित, स्नेहिल व अनुकरणीय आदर्श का उदाहरण थी। उनका आचरण एवं व्यवहार पूर्णतया मर्यादित था। इसीलिए स्वयं गुरूदेव ने उनका नाम 'भारत माता' रखा। वे आश्रम की वार्डन भी थी। शिवानी जी की शिक्षा-दीक्षा भी वही हुई थी। शिवानी जी के एक छोटे भाई हैं जिनका नाम है राजा एक सफल पत्रकार है। इस प्रकार शिवानी जी का विकास एक सुसंस्कृत वातावरण में हुआ।

शिक्षा दीक्षा -

शिवानी का बचपन रियासती वातावरण के कारण बड़े ही ऐशो आराम से बीता। शिवानी को और बच्चों की तरह खेलकूद से कभी कोई लगाव नही रहा। बचपन से ही उन्हें पढ़ने का बहुत शौक था। एक बार ''सरस्वतीचन्द्र'' छिपकर पढ़ने पर उनकी माँ ने उन्हें चाँटा भी मारा था। उनकी बचपन की शिक्षा उनके

धर्मत्राण पितामह के आदर्शो से प्रेरित थी। सुबह शिवानी घुड़सवारी सिखने जाती थी और उन्हे घुड़सवारी सिखने मिर्जा आते थे। शिवानी अपनी बहन के साथ मिसेज स्मिथ के पास उनके बंगले पर जाया करती थी। बारह वर्ष की अवस्था में शिवानी को भी अपने अन्य भाई-बहिनों के साथ शान्तिनिकेतन में विधिवत् विद्याभ्यास के लिए जाना पड़ा। शिवानी अपने संकोचशील स्वभाव के कारण साहित्यिक अभिरूचि एवं प्रतिभा होते हुए भी अपने भाई-बहिनों की तरह लोकप्रियता हासिल नहीं कर पाई थी।

शिवानी की शिक्षा राजकोट, वेरावल, रामपुर, नैनीताल, अलमोड़ा तथा शांतिनिकेतन आदि स्थानों पर हुई। शिवानी के अनुसार जो नौ साल शांतिनिकेतन में कटे वह मेरी जिन्दगी का सबसे अच्छा समय था। शांतिनिकेतन का स्वर्णयुग था। वहाँ जो भी पढ़ने लिखने के शौकिन थे, उनका एक ''टेगौर स्टडी सर्कल'' था। हम सब उसमें जाते थे। शांतिनिकेतन में गुरूदेव उन्हें ''गौरा'' नाम से पुकारा करते थे। शिवानी की साहित्यिक शक्ति का पता एक कार्यक्रम के अन्तर्गत चलता है। एक दिन गुरूदेव ने अंग्रेजी आशु कविता के कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें शिवानी की काव्य प्रतिभा निखर उठी।

गुरूदेव ने समस्या दी थी कि -

''इफ आई वर ए बोय''

शिवानी ने इसे इस प्रकार पूरा किया -

''इफ आई वर ए बोय
व्होट वुड बिकम आफ द बोय आइ लव''।

निर्णायक थे गुरूदेव। तालियों के बिच ही शिवानी को प्रथम पुरस्कार दिया, जो 'नोवल पुरस्कार' से कम न था ।

शान्तिनिकेतन में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जैसे शीर्षस्थ सहृदय विद्वानो

से उन्होंने हिन्दी भाषा एवं साहित्य की शिक्षा प्राप्त की।

शान्तिनिकेतन में ही उन्होंने रवीन्द्र संगीत और हिन्दुस्तानी संगीत सीखा। नृत्यविद्या की तालिम मृणालिनी स्वामी नाथन से ली।

शिवानी जी के अनुसार गुरूदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर प्रसिद्ध आचार्यगण, साहित्यकार और कलाकारों के सानिध्य में गुजरे ये दिन उनके अपने लेखन के लिए जैसे ईश्वर ने ही उन्हे अर्पण किये हो। उनकी पढ़ाई का माध्यम बंगला भाषा थी। इसीलिए उन्होंने बंगला साहित्य का काफी अध्ययन किया।

एक तरफ जहाँ शिवानी जी की अंग्रेजी की शिक्षा मि. एवं मिसेज स्मिथ जैसे अंग्रेजी अध्यापकों के संरक्षण में हुई, वहीं दुसरी तरफ उनकी संस्कृत शिक्षा अलमोड़ा निवास के दौरान पितामह के संरक्षण में पंडित गंगादत्तजी द्वारा हुई शिवानी के पितामह अनुशासन की डोर को असकर रहते थे। पितामह ने उनकी शिक्षा में काफी परिवर्तन कर दिया था। प्रात: काल ही संस्कृत के पंजित गंगादत्तजी आ जाते वे नित्य शिवानी को अमरकोश के पाँच श्लोक कठस्थ करके सुनते थे। फिर तीनो भाई बहनों को लाईन से खड़ा कर त्रिफला से आँखे धुलवाई जाती। अगर इसमें किसी ने जरा सी भी लापरवाही की तो हाथ पैर बांधकर लकड़ी की कोठरी में डाल देते और हफ्ता भर मूली, लौकी, कद्दू जैसी अरसिक सब्जियाँ खिलाकर नाक में दम कर देते। शिवानी सुप्रसिद्ध सिने कलाकार श्री बलराज साहनी की भी छात्रा रही है। सत्यजीत रे जैसे सिने निर्देशक उनके सहपाठी रहे है।

सात आठ साल की शिक्षा गुरूदेव की निगरानी में शांतिनिकेतन में हुई। शिवानी जी इस समय अंतराल को अपने जीवन का ''सुवर्णकाल'' कहती है।

कुमाऊँ प्रदेश भारत का एक अत्यन्त ही सुंदर प्रदेश है प्रकृति के अमर चितेरे सुमितानंदन पंत इसी कुमाऊं की इसी धरती से है।

शिवानी जी ने लिखा है- सुबह इनके साथ (लोहनीजी) घुमने जाना

अनिवार्य था। हमारे घर की परिक्रमा करने पर पूरा अल्मोड़ा ही देखा जा सकता था। इधर देवीधुरा गढ़वाल की धुंधली चोटीया, उधर इणागिरी, गागर, मुक्तेश्वर, जलना और बानड़ी है। जाली से घिरी घर की बड़ी खिड़की को हमारी दादी रामझरोखा कहा करती थी। तीन चार वर्ष तक रामझरोखे में बैठने का सौभाग्य रहा, फिर हमें शांतिनिकेतन भेज दिया गया।

शिवानी के पिता राजकोट में राजकुमारों को पढ़ाते थे। अतः राजघरानों के तौर-तरीके से वह भली भाँति वाकिफ रही है। शिवानी के पिता जब रामपुर की रियासत में थे तब सिकंदर मिया उन्हे घुड़सवारी सिखाने आते थे। वहाँ के रेवेन्यू मिनिस्टर ब्रजचन्द्र शर्मा के पुत्र कृष्ण चन्द्र भी उनके साथ ही घुड़सवारी सीख रहे थे। जब सिकंदर मियाँ कहते बिट्टो तुम अब घुड़सवारी में किसुन भैया को भी पछाड़ सकती हो तो शिवानी गर्व से फूल उठती।

पारिवारिक जीवन –

शिवानी के माता पिता ने उनका विवाह जब वे बी.ए. में थी तभी निश्चित कर दिया। शिवानी का विवाह पुराने रिवाजों एवं परम्परा के अनुसार हुआ था। उन्होंने अपने पति को विवाह से पूर्व देखा भी नही था। फिर भी शिवानी सन्तुष्ट है। अपने पति के बारे में उन्होंने लिखा है कि-'उनकी अन्तिम सांस तक मुझे संतोष रहा कि शायद लव मेरिज करती तो भी इतना अच्छा पति नही मिलता।''[1]

शिवानी के पति भी विद्वान थे। उनके प्रोत्साहन से शिवानी ने अपने लेखन को और भी परिष्कृत किया। वे पहले लेक्चरर थे, फिर शिक्षा मंत्रालय में चले गये, जहाँ उन्होंने संयुक्त सचीव का पदभार संभाला। शिवानी के बच्चो पर भी अपने संस्कारित माता-पिता की छाप स्पष्टतः दृष्टिगोचर होती है। शिवानी के दो पुत्रियाँ और एक पुत्र है। उनकी बेटी मृणाल पाण्डे हिन्दी की सुप्रसिद्ध कथाकार और

1- जालक- शिवानी- पृ- 123

पत्रकार है। ''वामा'' तथा ''साप्ताहिक हिन्दुस्तान'' में संपादिका रहने के बाद सम्प्रति वे ''दैहिक हिन्दुस्तान'' की संयुक्त संपादक हैं। ''स्त्रीःदेह की राजनीति से देश की राजनीति तक तथा ''परिधि'' पर स्त्री जैसे चर्चास्पद एवं विवादित नारीवादी ग्रन्थ की वे लेखिका है। दिल्ली के ''जिसस एण्ड मेरी कॉलिज'' में भी उन्होंने प्राध्यापिका का पद भार संभाला। मध्यप्रदेश की विभिन्न कॉलेज में तथा युरोप और अमेरिका में भी वह अध्यापन का व्यवसाय कर चुकी है। इनके पति हवाई के ईस्ट-वेस्ट सेक्टर में है।

शिवानी अपने लेखन कार्य को एक नशा मानती है। प्रतिदिन लिखती है।

शिवानी जी ने एक भरपूर उमंगो भरा रंगारंग जीवन जिया है। उनके पास समृद्ध जीवनानुभवों की अनमोल पूंजी है। इन अनुभवों के कारण ही उन्होंने हमारे उच्चवर्गीय जीवन तथा कुमाऊँ प्रदेश के जन-जीवन को चित्रित किया है।

ज्यादातर उन्हे रात में एकान्त में लिखना अच्छा लगता है।

घर-गृहस्थी के साथ-साथ अपने लेखन कार्य को भी सुचारू रूप से चला पाना कोई आसान कार्य नही है इसी सन्दर्भ में शिवानी ने लिखा हैं - ''एक हाथ से चिमटा और लेखनी पकड़ना बहुत सुगम नहीं है। प्रायः कहानी लिखने बैठती हूँ तो समय का पता नही चलता पंख लगाकर उड़ जाता है। युनिवर्सिटी, स्कूल से बच्चे लौटते है तो अचकचाकर नाश्ता जुटाती हूँ। रात को खाने की मेज पर एसेम्बली के - से प्रश्न पूछे जाते है। लड़कियों के व्यंग्य-बाण छूटने लगते है। लगता है दीदी ने आज कहानी लिखी है, इसीसे सब्जी जलकर राख हो गयी है। अभियुक्त के पास इसके विरोध में कोई दलील नहीं हैं। यह सचमुच मेरी दुर्बलता है, कहानी लिखती हूँ तो सब्जी जला देती हूँ। और सब्जी बनाती हूँ तो कहानी।''[1] फिर भी शिवानी ने अपने सभी कर्त्तव्य को पूरा करते हुए लेखनी को जारी रखा।

1. जालक -शिवानी -पृ-132

* * * *

मुझे जब शिवानी जी की मृत्यु का समाचार 'साहित्य अमृत' के द्वारा प्राप्त हुआ तो मुझे अत्याधिक आघात पहुँचा। मेरी उनसे मिलने की इच्छा पूरी न हो पाई। अस्सी वर्ष की उम्र में राजधानी दिल्ली में शिवानी ने अंतिम साँसे ली 21 मार्च, 2003 ब्राह्य मुहुर्त की बेला, पौ फटने वाली है, मंद-मंद शीतल बयार बह रही है, मस्जिद में अजान हो रही हैं, गुरुद्वारे में सबद पाठ हो रहा है, मन्दिर में आरती की घन्टियाँ बज रही हैं ऐसे समय शिवानी जी ने महाप्रयाण किया।

कभी शिवानी जी ने कहा था,''भारतीय वर्तमान समाज अपना स्वाधीन चिंतन बहुत पहले खो चुका है। आज की हमारी नवीन संस्कृति हो या नवीन चिंतन उसका लगभग सबकुछ पश्चिम से उधार ली गई संपत्ति है। वह कर्ज चुकाने में एक दिन हम स्वयं कंगाल हो जाएँगे। यह हम अभी नहीं समझ पा रहे हैं, जब समझेंगे तो बहुत देर हो चुकी होगी।''[1] सचमुच ही अब उनके जाने के बाद यह अहसास और गहरा होता जा रहा है कि चिंतन की तो बात ही छोड़िए, अब तो सामान्य व्यवहार भी स्वाधीन नहीं।

शिवानी जी आज नहीं रहीं विश्वास नहीं होता। आज भी वे अपनी कृतियों-कालिंदी, कृष्णकली, चौदह फेरे उपन्यासों के माध्यम से जीवित है। वह स्त्री थीं, इसीलिए नारी सौंदर्य के पीछे दुःखों और शोषण के हाहाकार को अपनी रचनाओं में अंकित किया। उनके चरित्र देर तक पाठक के मन में बसे रहते हैं। हिंदी कथा के पाठकों में पैठ बनाने वाले उन जैसे रचनाकार कम ही होंगे।

साहित्यिक विकास -

शिवानी को बचपन से ही साहित्य से बेहद लगाव था। कहा जाता है कि पूत के पाँव पालने में ही नजर आ जाते है अतः साहित्य की ओर उनका रूझान

1- साहित्य अमृत -महेश दर्पण - पृ-34

स्वाभाविक था। शिवानी जब नवी-दसवीं कक्षा की छात्रा थी तभी से वह ''विश्व भारती '' पत्रिका में लिखने लगी थी। वे छोटी-छोटी घरेलू बातें लिखती थी। उन्होंने ग्यारह वर्ष की उम्र में पहली कहानी लिखी 'सिन्दूरी' यह कहानी बंगला पत्रिका 'नटखट' में छपी थी। शिवानी के अतिप्रिय लेखक प्रेमचन्द, टैगोर और गोर्की है। आज के लिखने वालों में उन्हें मन्नू भण्डारी, मंजूल भगत तथा बिन्दु सिन्हा अच्छी लगती है। इस्मत चुगताई उन्हें शुरू से ही प्रिय रहे हैं। लखनऊ के आकाशवाणी द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों में भी वे हिस्सा लेती रही है। हैदराबाद के तेलगू लेखिका सम्मेलन में अध्यक्षता के लिए आमन्त्रित होती रहती है। इसके अतिरिक्त दूरदर्शन कार्यक्रमों द्वारा भी वे सक्रीय रहकर लोगों का पथप्रदर्शन करती रही है। देश के अन्य क्षेत्रो में भी उन्हें उतना ही सन्मान मिला है जितना कि अपने क्षेत्रों में।

शिवानी की कृतियाँ ही उनके व्यक्तित्व को प्रदर्शित करती है। 1980 में राज्य सरकार ने अपने संस्मरण को रामचन्द्र शुक्ल पुरस्कार से सन्मानित किया है। प्रायः पाँच वर्षो से हिन्दी की पत्रपत्रिकाओं में संस्मरण नियमित रूप से लिखती रही है। कहानी व उपन्यासों की भाँति उनके संस्मरण भी प्रशंसनीय है। शिवानी को जालक, गवाक्ष, वातायन आदि रचनाओं के द्वारा भाषाकला, संस्कृति अभिनय यात्रा सामाजिक समस्या, ग्रामीण जीवन आदि को उभारा गया है।

शिवानी की सफलता पर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने भी प्रशंसा की है। उन्होंने लिखा है कि ''गोरा शान्तिनिकेतन की छोटी सी मुन्नी, मेरी परम प्रिय बहिन और छात्रा है बचपन में बड़ी सुक्ष्म बुद्धि की थी, उसकी दृष्टि बड़ी पैनी थी। मेरे परम पारसी मित्र और गौरा के दूसरे अध्यापक पं. निताई विनोद रस्तोगी कहा करते थे कि यह लड़की अवसर मिलने पर बहुत प्रतिभाशालिनी सिद्ध होगी। वे गौरा की भाषा और प्रकाशन भंगिमा को तभी बहुत दाद देते थे।''[1]

1- मेरी प्रिय कहानियाँ -भूमिका आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

शिवानी की लोकप्रियता एवम् लेखन क्षमता का मुख्य कारण उनका भाषा ज्ञान है। बचपन से ही उन्हे कतिपंच भाषाएं सिखने का अवसर प्राप्त हुआ था। गुजराती, बंगला, हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी आदि भाषांओं पर उनका समान रूप से अधिकार है वे इन सभी भाषाओं को आसानी से पढ़ती है, लिखती है और बोल लेती है।

उन्होंने अपनी लेखनी को इन्ही विविध भाषाओं के ज्ञान के द्वारा समृद्ध और गतिशील बनाया था।

भाषा के द्वारा अपने हृदयगत भावों को ज्यों का त्यों प्रकट करने की उनमें अद्‌भूत क्षमता है।

हिन्दी साहित्य में शिवानी ने अपना जो एक विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है उसका श्रेय शांतिनिकेतन को है। शिवानी ने अपने जीवन में काफी यात्ताऐं की है और घूम-फिर कर उन्होंने अपने अनुभव के क्षेंत्रफल को और भी बढ़ा लिया। शिवानी बड़ी सूक्ष्म दृष्टि से किसी भी बात का अवलोकन कर उसे बड़ी ही सहजता में प्रस्तुत करती थी और यही उनकी सफलता की कुंजी थी।

उन्होंने भाषा एवं बहुज्ञता के बारे में लिखा है, ''मैंने बंगला के अनेक सुहावने मुहावरों से अपनी कहानियों को संवारा है। गुजराती की पाणेतर बुंदेल खण्ड की कंकरेजी कुमायूँ की मक्खी बेल तथा सोलह पाटों का लहराता लहँगा, बंगाल के लाल पाड़ की गरद सबकी विभिन्नता छटाओं से अपने पाठकों को मोहने की चेष्टा मैंने की हैं।''[1]

कृतित्व -

शिवानी की साहित्यिक विधाओं में उपन्यास, कहानी, निबंध, रेखा चित्र, संस्मरण एवं बालसाहित्य आदि आते हैं अर्थात् शिवानी ने साहित्य की सभी

1- जालक- शिवानी - पृ-151

विधाओं में अपनी लेखनी का जौहर दिखाया है। और सभी में इतनी सशक्त लेखनी चलाई है जो उन्हें सफलता की ओर ले गई है।

उनके साहित्य को विभिन्न भागों में हम विभाजित कर सकते हैं -

(अ) उपन्यास

(ब) कहानी

(स) संस्मरण एवं रेखचित्र

(द) बालसाहित्य

(अ) उपन्यास

1. मायापुरी (1957) 2. चौदह फेरे (1960) 3. कैंजा (1975)

4. कृष्णकली (1962) 5. भैरवी (1969) 6. श्मशान चम्पा (1972)

7. सुरंगमा (1975) 8. रतिविलाप (1977) 9. विषकन्या (1977)

10. रथ्या (1977) 11. माणिक (1977) 12. किश्नुली (1979)

13. कृष्णवेणी (1981) 14. गैंडा (1978)

15. चल खुसरो घर आपने (1982) 16. विवर्त (1984)

17. महौब्बत (1984) 18. पूतोंवाली (1986) 19.कस्तुरी मृग (1987)

20. अतिथी (1987) 21. कालिंदी (1994) 22. उपप्रेती (1997)

23. स्वयं सिद्धा (1987)

कहानी संग्रह

1. अपराधिनी (1974) 2. कैंजा (1975) 3. स्वयंसिद्धा (1977)

4. रथ्या (1977) 5. माणिक (1977) 6. गैंडा (1978)

7. मेरी प्रिय कहानियाँ (1978) तीसरा संस्करण 8. पूतोंवाली (1986)

9. पुष्पहार 10. उपहार 11. एक थी रामरती

12. चिरस्वयंवरा 14. विषकन्या 15. लाल हवेली (अप्राप्य)

16. टोला (अप्राप्य) 17. कृष्णवेणी 18. मेरा भाई

19. मणि म ाला की हँसी

(स) संस्मरण एवम् रेखाचित्र

1. झरोखा (1979) 2. वातायन (1975)

3. गवाक्ष (1975) 4. दरीचा (1978)

5. चार दिन की (1978) 6. झूला (1979)

7. जालक (1979) 8. यात्रिक (1981)

9. आकष ललित निबंध (1984) 10. आमोदर शांतिनिकेतन (1986)

11. चरैवती (1987) 12. कस्तुरी मृग (1987)

13. बिन्नू (अप्राप्य) 14. मंजीर (अप्राप्य)

15. क्यों (अप्राप्य) 16. गुरूदेव और उनका आश्रम (अप्राप्य)

17. हे दत्तात्रेय (अप्राप्य)

(द) बाल साहित्य

1. बचपन की याद (अप्राप्य) 2. राधिका सुन्दरी (1961) तीसरा सं.

3. हर हर गंगे (अप्राप्य) 4. अलविदा (अप्राप्य)

5. स्वामी भक्त चूहा (1961) तीसरा सं. 6. भूत अंकल (अप्राप्य)

7. आईसक्रीम महल (अप्राप्य)

निष्कर्ष

शिवानी ने अपनी लेखनी का कमाल हर क्षेत्र में दिखाया है। फिर चाहे वो बच्चों के मनोभावों के बारे में लिखे या किसी स्त्री एवं पुरूष के बारे में इसलिए इन सभी के मानस को बाँधे रखना ही उनकी लेखनी की विशेषता है। शिवानी की कृतियों में स्त्री पुरूष के प्रेम सम्बन्धों से लेकर नारी जीवन की अनेक समस्याओं को उजागर किया गया है।

शिवानी निरन्तर नारी जीवन को संदेश देती रही है। और निरन्तर उनकी लेखनी इसी क्षेत्र में गतिशील भी बनी रही है। उनका कृतित्व भी उनके व्यक्तित्व की तरह ही उज्ज्वल है।

शिवानी के व्यक्तित्व और उनके कृतित्व के पीछे उनकी आनुवँशिकता और शिवानी का सम्पूर्ण परिवेश बहुत सक्रीय है। शिवानी के ऊपर यह कहावत पूर्णतः चरितार्थ होती है।

''होनहार बीरवान के होत चिकने पात।''

आज के वैज्ञानिक भी इस बात को मानते है कि व्यक्तित्व के निर्माण में अनुवंशिकता और वातावरण दोनों का हाथ रहता है।

1. मायापुरी (1957)

'मायापुरी' शिवानी का एक सशक्त एवं मार्मिक उपन्यास है। उसमें आज के अर्थप्रधान युग में बनते-बिगडते सम्बन्धों का मार्मिक चित्रण हुआ है। शोभा एक सीधी-सादी लड़की है। माँ के अनुरोध पर वह गाँव छोड़कर लखनऊ पढ़ने जाती है। वहाँ जिन लोगों के साथ वह रहती है। उसी परिवार के सतीश नामक युवक से उसे प्रेम हो जाता है। सतीश ही पहले शोभा के प्रति आकृष्ट होता है। शनैः-शनैः यह आकर्षण प्रेम में बदल जाता है। सतीश शोभा के प्रेम में उन्मत-सा हो जाता है। परन्तु जब सतीश की माँ को इस बात का पता चलता है तो वह बौखला उठती है और शोभा को दूध में गिरी मक्खी की भाँति अपने बेटे की जिन्दगी से निकाल देती है।

सतीश की माँ अपने बेटे को समझा देती है कि जिससे उसका विवाह तय हुआ है उसके पिता तिवारी जी भारत सरकार में राजदूत के पद पर हैं। जो उसकी जिन्दगी को संवार सकते हैं। इतना ही नहीं, उनके बहुत उपकार है इस परिवार पर। सतीश के पिता जब कर्जे में डूबे हुए थे, तब तिवारीजी ने ही उन्हें उस सागर

से डूबते हुए बचाया था। आज वे जो कुछ भी है उनकी बदौलत है। और इन सब तर्कों के आगे सतीश को अन्ततः घुटने टेकने पड़ते हैं। कमलेश्वर के 'आगामी अतीत' के कमल बोस की भाँति प्रेम और भौतिक समृद्धि में सतीश भी अन्ततः भौतिकता के भवसागर में गोता लगा देता है।

माँ की इच्छा तथा भीतर से भौतिकता की चाह के कारण शोभा के प्रेम का गला घोट जाता है। सविता से सतीश का विवाह हो जाने पर सतीश पर भी पैसे का नशा चढ़ता है, जिसके खुमार में वह अपने बीमार बूढ़े माँ-बाप को भी भूल जाता हैं। परन्तु यह खुमार भी धीरे-धीरे उतरने लगता हैं। सविता बड़े बाप की बेटी थी। उसके पिता के कई उपाकर थे सतीश के परिवार पर एक तरह से उसके पिता ने सतीश को खरीद लिया था। पर वह तो मूल था, सूद तो अभी बाकी था, जिसे सविता वसूल कर रही थी, निरन्तर सतीश को उपेक्षित व अपमानित करके। अचानक एक बार उसे शोभा मिल गई। उसे देखकर वह तड़प उठा और अपनी भावुकता के आवेग में उसने अपनी नरक कहानी उसे बताई। उसने बताया कि उसे काबुल भेजा जा रहा है। उसे काबुल भेजने के पीछे सविता के पास दो कारण हैं। एक जिससे वह कभी शोभा से मिल ना सके और दूसरे वह अपने मित्रों में स्वच्छंदतापूर्वक विहार कर सके। सविता की इस इच्छा की पूर्ति उसके पिता ही करते है। हमारे तथाकथित व उच्चवर्गीय समाज में पिता अपनी पुत्रियों को कैसे संस्कार देते हैं, तिवारी जी इसके उदाहरण हैं। भौतिकता की चकाचौंध में तथा पश्चिम के गलत अनुसरण में भारतीयता तो ठीक वे मानवमूल्यों को भूल जाते हैं। इस तथाकथित उच्च समाज में विवाह को एक 'लायसन्स' समझा जाता हैं, जिसे मुहैया करने पर जिन्दगी की गाड़ी को कैसे भी चलाने का अधिकार मिल जाता हैं। परन्तु यह लायसन्स तिवारिजी के पास अधिक समय नही रहता, क्यों कि काबुल जाते हुए सतीश का हवाई जहाज दुर्घटनाग्रस्त हो जाता हैं और सतीश का उसमें

निधन हो जाता है। सतीश के माता-पिता ने पैसे व नाम के लिए अपने बेटे का विवाह बड़े घर में करवाया, यह जानते हुए कि सतीश शोभा को चाहता है और शोभा एक सुन्दर व सुशील लड़की है। परन्तु आज के इस भौतिकतावादी युग में पैसे के आगे प्रेम का कोई मूल्य नही आँका जाता, हालांकि अन्ततोगत्वा उसकी भी कीमत तो चुकानी ही पड़ती हैं। (आगामी अतीत) के कमल बोस को भी चुकानी पड़ी और सतीश को भी, उसके माँ-बाप को भी। सतीश व्यवहार कुशल था। शोभा उसकी जिन्दगी में आयी उसके पहले ही उसका सौदा हो चुका था। तिवारीजी ने उसे आगे पढ़ने विलायत भेजा था। जब वहाँ से लौटा तो शोभा से मिला और यौवनसुलभ स्वप्निलता में कुछ समय के लिए बह गया। परन्तु माँ के समझाने पर सविता से विवाह कर लिया। सविता छलावा सिद्ध हुई। अन्त में हवाई दुर्घटना में सतीश की तो मौत हो गई वह मुक्त हो गया। शोभा तड़पती हुई रह गई। इस प्रकार यह एक नारी त्रासदी की कहानी है। भौतिकता की मृग-मरीचिका कैसे ठगती है यह भी इसमें संकेतित हुआ है।

प्रो. सिद्धेश्वर प्रसाद ने 'राह की खोज' नामक लेख में इस ओर संकेत करते हुए लिखा है-

''पुँजी पुँजी है, पैसा पैसा है, समाजवादी हो या पूँजीवादी पर पैसा कभी भी आदमी की जगह नहीं ले सकता।''[1] जब समाज में ऐसी स्थिति आती है तो समाज की गिरावट शुरू हो जाती हैं, पैसे को सर्वोपरि मानने वाले समाज के युवक अनुशासनहीन, अविवेकी, और अधीर हो जाते हैं। सभ्यताओं के उत्थान और पतन का यही इतिहास दर्शन और विकास सूत्र है। भोग व्यक्ति और समाज दोनों को निचे ले जाता है और त्याग ऊपर।

कामायनी निरूपित देव-संस्कृति का विनाश भी उनकी अत्याधिक भोग

1- नवभारत टाइम्स- 15-6-93- पृ-4

लिप्सा का ही परिणाम था। शिवानी प्रणीत 'मायापुरी' भी यही संदेश दे जाता है।

चौदह फेरे – (1960)

चौदह फेरे कुमाऊँ प्रदेश के दो मिथ्याभिमानी पुरूषों के अहं की कहानी हैं। सर्वेश्वरदयाल कुमाऊँ के एक अत्यन्त दरिद्र एवं सादारण परिवार का पुत्र हैं। वह अपने परिश्रम, अध्यवसाय तथा बुद्धिमता से आई. एफ. एस कर भारतीय विदेश सेवा में एक उच्च अधिकारी के पद पर आसीन हो जाता है।

लेखिका का विचार है कि जब कोई साधारण स्थिति का व्यक्ति उच्च पद पर बैठ जाता है तब अपनी आत्महीनता को छिपाने के लिए वह वैभव का मिथ्या प्रदर्शन करता है। उच्च पद के कारण संवर्द्धित अहं, आत्महीनता एवं मिथ्या प्रदर्शन प्रियता उसके आचरण को असंतुलित एवं हास्यास्पद बना देती है। 'चौदह फेरे' में शिवानी ने ग्रामिण और नगरीय दोनो परिवेशों का मिला-जुला रूप दर्शाया हैं।

इस उपन्यास में नंदी, अहल्या सुभ्रदाताई, मल्लिका बसंती आदि नारी चरित्र है।

कर्नल शिवदत्त पाण्डेय का जन्म कुमाऊँ के किसी गाँव में हुआ था। पिता संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित थे, परन्तु शिवदत्त ने अंग्रजी साहित्य में एम.ए. किया था। 'कर्नल' शिवदत्त का उपनाम था। एम.ए. करने के बाद विल्सन नामक एक विदेशी उद्योगपति कर्नल के सम्पर्क में आया। पहले उनके यहाँ नौकरी करता हैं फिर उनकी अतुल सम्पत्ति का स्वामी बन बैठा। विल्सन की पुत्री पिट्टरिया से प्यार होते हुए भी अपने रूढ़ीचुस्त विचारों के कारण कर्नल नंदी नामक एक गँवार लड़की से विवाह करते है। कर्नल के चरित्र में काफी अन्तर्विरोध मिलता है। उनका बाह्य रहन-सहन अंग्रेजी ढ़ंग का है। परन्तु वैचारिक धरातल पर वह रूढ़िचुस्त है। विवाह के नाम पर नंदी से विवाह कर लेते है पर उसे गाँव में रख छोड़ते हैं नंदी पहले अपनी ससुराल फिर अपने भाई भाभी के पास रहती है। कर्नल से उसे एक

पुत्री है। जिसका नाम अहल्या है। कलकत्ते में कर्नल की एक रखैल है मल्लिका। वैसे कर्नल की जिन्दगी में कई स्त्रीयाँ आती हैं परन्तु मल्लिका से उसका व्यवहार लगभग पत्नीवत हैं। पति के वैभव और ऐश्वर्य के रहते हुए भी नंदी को गाँव में अपनी भौजाई के ताने सुनने पड़ते हैं। और उसका जीवन दरिद्रता में व्यतीत होता हैं। अहल्या के कुछ बड़ी हो जाने पर उसके भविष्य का विचार करके नंदी एक दिन कलकत्ता पहुँच जाती है। कर्नल उसे इस शर्त पर रहने देता हैं कि वह उसके जीवन में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नही करेगी। वैसे नंदी मल्लिका से अधिक सुन्दर थी। परन्तु अशिक्षित होने के कारण वह गँवार और कर्नल की भाषा में असभ्य दिखती थी। नंदी अपनी बेटी का ध्यान करके कदाचित अपनी जिन्दगी वहाँ गुजार भी देती परन्तु कर्नल अहल्या को ऊँटी के कान्वेन्ट स्कूल में भर्ती कर देता हैं। नंदी वैराग्य धारण करके अपने गुरू के आश्रम में चली जाती हैं। अहल्या जब युवती होती है तब तक अपनी माँ को विस्मृत कर चुकी होती हैं। मल्लिका को वह अपनी माँ ही समझती है। कर्नल अपनी बेटी को अंग्रजी ढंग की शिक्षा तो देते हैं, परन्तु विवाह तो उसका किसी कुमाऊँ पंत से ही करना चाहते हैं। कर्नल अहल्या के लिए सर्वेश्वर दयाल पंत का चुनाव करते हैं। किन्तु अहल्या को उसका ओछापन अच्छा नहीं लगता और वह मन ही मन उससे घृणा करने लगती है। वह राजू से प्यार करने लगती है जो कि भारतीय सेना में अफसर था। अंत में वह विवाह मंडप से भागकर राजू से शादी कर लेती हैं।

कैंजा – (1962)

'कैंजा' शिवानी का लघु उपन्यास है। इसमें सुन्दरता पर आसक्त प्रेमी और सदा से हृदय में प्रेम रखकर भी एक मूक मौन रहनेवाली प्रेमिका का रोचक चरित्र प्रस्तुत हुआ है। 'कैजा' शब्द का प्रयोग सौतेली माँ के लिए किया गया है। एक आधुनिक डाक्टर युवती की मनोदशा का अत्यन्त रोचक चित्रण इसमें हुआ है जो

विमाता का भार वहन कर अनाचारी और रूग्ण प्रेमी से स्वेच्छा से विवाह करती है। वास्तव में कैंजा के स्थान को प्राप्त करने के पश्चात् उसकी मनस्थिति का अत्यन्त सूक्ष्म विश्लेषण शिवानी ने इसमें किया हैं। ''नारी मन की गुत्थियों को सुलझाना सरल काम नहीं है। और उसके मन के भीतर जो चल रहा है उसे विश्लेषण करना और भी कठीन हैं पर शिवानी ने इस स्थिति का और मनोदशा का सूक्ष्म विश्लेषण पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया हैं। शिवानी ने जो चरित्र हिन्दी को दिये हैं उससे पाठक परिचित ही हैं।''[1] कैंजा कभी न भुलाये जाने वाला चरित्र हैं। कैंजा विमाता हैं। नंदी तर्वे ने कैंजा होना स्वीकार कर लिया था। वह स्वयं समझ नही पायी थी कि जिसके नाम से सारा गाँव थू-थू करता हैं वह एक दिन उसकी 'कैंजा' बन जायेगी। शिवानी ने सदा ही ऐसे चरित्र दिये हैं जिसमें कुछ न कुछ असाधारण और असामान्य है। अपने साधारण और सामान्य व्यक्तित्व में ही कही कुछ उनमें ऐसा रहता हैं जिसके कारण वे चरित्र पाठकों को लुभावने लगते है। 'कैजा' की नन्दिनी तिवारी इसका उदाहरण है।

''उनके उपन्यासों ने समाज के जीते जागते पात्रों को उठाकर अमर कर दिया है। उनके चरित्र संकेत होते है, शेष परिचय पाठक अपने समाज के उन पात्रो के जीवन में पला रहता है। और इस तरह शिवानी की कहानी पुस्तकों की पक्तियों से शुरू होकर समाज के पृष्ठों पर चलती है, कैजा की नन्दी तर्वे की कहानी भी समाज के पृष्ठों पर चलने वाली कहानी हैं।''[2]

'कैंजा' कहानी हैं नन्दी तर्वे और भट्ट के प्रेम की।

वह सुरेश भट्ट ''उस कछावर पहाड़ी जवान का रंग कुमाऊँ के शाहों का, और ऊँचा कद वहा के क्षत्रियों का था। मुंदी पलकों की चिलमन उठाकर वह जोर

1- व्यक्ति चेतना और स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी -उपन्यास- डॉ. पुरुषोत्तम दूबे

2- केंजा-शिवानी प्रकाशक के वात्तव्य से आवरण पृष्ठ 52

से हाँकता नाश हो इस स्वर्ग की मेनका का जिसने मुझ जैसे विश्वामित्र की तपस्या भंग की।'' नन्दी तर्वे के प्रति कहे गये इन वाक्यों को सुनकर नन्दी की नजर उस नाशपीटे की ओर उठ जाती ।

''गोरी चिट्टी सिल सी छाती पर पड़ी यज्ञोंपवित की उज्वल डोरी, बिना पुँछी शुभ्रवर्णी रजत देह पर मोती सी चमकती पानी की बुँदे और स्वयं ही सीधी माँग में विभक्त हुए चिकने केश।''[1]

सुरेश भट्ट के व्यक्तित्व में ही ऐसा आकर्षण था कि नन्दिनी तर्वे उसकी ओर आकर्षित होती गयी। मूक रहकर वह उसके प्रति प्रेम को कभी अभिव्यक्त नहीं कर सकी। किन्तु नन्दिनी की कोई रात ऐसी नही थी जब उसे सुरेश भट्ट का स्मरण न आया हो। सम्भवतः यह कारण था कि उसके पुत्र को उसने अपना समझकर ही पाला पोसा था। कभी उसे ज्ञान नहीं हुआ कि नन्दिनी कैंजा अर्थात् विमाता हैं। सुरेश भट्ट के जीवन के अतीत में जब कि वह रूग्ण शय्या पर पड़ा हैं नन्दिनी उससे विवाह करने का निर्णय लेती हैं। और पहलीबार वह अपना निर्णय अपनी ताई को सुनाती हैं। किन्तु इस निर्णय में थी उसके रोहित के प्रति मातृत्व का ही अधिक झुकाव था। सारे गाँव वालों के सामने उसने रूग्ण सुरेश भट्ट के साथ फेरे लिये थे। और वह भी उस समय जबकि सुरेश भट्ट में सात फेरे लेने का भी सामर्थ्य नहीं था। ऐसा विचित्र विवाह सारे संसार में कही नहीं हुआ था।

''कई बार विवाह वेदी से उठकर वधू ने उसकी नब्ज देखी सप्तवेदी के बीच पावन अग्नि की आँच में ही सिरिंज उबाल, उसे इन्जेक्शन दिए। और जब फेरे फिरने का समय आया तो वर विहिन वधू पीले पटके से अपने आँचल को बाँध अकेले ही पावन अग्नि की प्रदिक्षणा कर गई थी।''[2]

1- केंजा- शिवानी प्रकाशक के वाक्तव्य से आरवण पृष्ठ-14

2. वही - शिवानी- पृ-58

इस विचित्र विवाह को और उसके सारे परिणामों को मानकर नन्दी तर्वे ने यह निर्णय लिया किन्तु योग ही ऐसा था कि नन्दिनी के लाख प्रयत्न करने पर भी सुरंश भट्ट बच नही सका। यहाँ तक कि नन्दिनी कहती ही रही, ''सुरेश भट्ट तुमनें तो मेरी एक बात नहीं सुनी मैंने ही तुम्हारा नाश किया है। ठीक कहते थे तुम बड़ी देर कर दी मैंने बड़ी देर। पर जाने से पहले सुन जावो सुरेश मैंने जीवन में तुम्हीं से प्यार किया था। पर कहाँ था जो सुनता।''[1]

नन्दिनी का यह दुर्भाग्य ही था कि जिसे उसने चाहा उसे स्वीकार नही कर सकी। और जब उसे स्वीकारा तो जीर्ण अवस्था में, जब कि वह मौत की गोद में सोया था। नन्दिनी की यह कहानी तपस्या की कहानी है जिसमें सुन्दरता पर आसक्त प्रेमी जीवन भर प्रेमिका को पा नहीं सका और वही स्थिति उसकी प्रेमिका की हुई। आरम्भ से अन्त तक पाठको के हृदय रचना बाँधकर रखती हैं। अत्यन्त सीधी-साधी भाषा में कुछ ऐसा अर्न्तमन की तरंगो का प्रवाह हैं कि पाठक सहज ही उसमें बह जाते हैं। इसके पात्र भुलाये नहीं जाते। शिवानी ने कैंजा में ऐसे ही कुछ विशिष्ट पात्रों को उभारा हैं, जो पाठको की नजर में अनायास ही चढ़ जाते हैं और कथा समाप्त कर लेने पर भी भुलाए नहीं भूलते। कैंजा एक अत्यन्त मनोबेधी एवं जबरदस्त चरित्रों को लेकर चलने वाला लघु उपन्यास हैं। अपने छोटे से आकार में इसकी प्रेषणीयत्ता एवं संवेदनशीलता प्रशंसनीय बन पड़ी हैं।

कृष्णकली – (1962)

शिवानी के उपर्युक्त उपन्यास में सामंत कालीन समाज और स्वातंत्र्योत्तर आधुनिक नगरीय जीवन की चकाचौंध भौतिकता को एक साथ चित्रित किया है। उपन्यास के प्रारंभिक अंशों में स्वतंत्रता-पूर्व के देशी राज्यों की सामंत कालीन मनोवृत्तियों को रेखांकित किया गया हैं। नाच-गान, मुजरा आदि सामंतकालिन

1. कैंजा-शिवनी - पृ-62

जीवन के अन्तरंग हिस्से बने हुए थे। मुनीर अपने समय की प्रसिद्ध नृत्यांगना और नेपाल के राणा की रखैल थी। मुनीर के तीन बेटियाँ थी-माणिक, हीरा, पन्ना। इन तीनो के पिता अलग-अलग थे। माणिक नेपाल के राणा की पुत्री थी, जिसमें उसके राजवंशी पिता के तीखे नैन-नक्श तथा रौब-दाब था। हीरा लाटसाहब के हब्शी नौकर रौबी की पुत्री थी और अशवेत होते हुए भी शारीरिक डीलडौल के कारण अत्यन्त सुन्दर थी जिसे मुनीर अपनी 'ब्लैक ब्यूटी' कहती थी। पन्ना लाट साहब के ए.डी.सी रोबर्टसन की पुत्री थी जिसमें उसके अंग्रेज पिता की गौरता उसके सौन्दर्य को चार चाँद लगाती थी। इस उपन्यास का सम्बन्ध इसी पन्ना तथा उसकी पालक बेटी कृष्णकली से है।

नृत्यांगना होने के बावजूद पन्ना विद्युतरंजन मजूमदार को छोड़कर किसी को अपने शरीर का स्पर्श तक नहीं करने देती। नृत्य और संगीत से उच्चवर्गीय लोगों का मन बहलाना पन्ना का पेशा हैं, तो मजूमदार उसके जीवन का एक अछूता कोना है। वह उसका प्यार हैं। मजूमदार एक राजनीतिक नेता है। उसी से पन्ना को जीवन की प्रौढावस्था में गर्भ रहता हैं। मुनीर और हीरा की एक कार-अकस्मात में मृत्यु हो चुकी थी और मुनीर के व्यवसाय की बागडोर अब माणिक ने थाम ली थी। पन्ना माणिक का आदर करती हैं। अतः संकोच के कारण वह अपनी बड़ी बहन के सामने गर्भ वाली बात प्रकट नही होने देती और कुछ महिने चढ़ने पर माणिक को सूचना दियें बिना चुपचाप अलमोड़ा चली जाती हैं। अल्मोडा में उसका अन्तरंग परिचय विदेशिनी डॉ. पैदारिक से होता है जो वहाँ के कुष्ठाश्रम में अपनी सेवाएँ अर्पित करती थी। पन्ना की पुत्री जनमते ही परलोक सिधार जाती हैं। उन्ही दिनों में अल्मोंड़ा के कुष्ठाश्रम में एक लड़की का जन्म होता हैं। वह कुष्ठरोग से पिड़ित माता-पिता की संतान थी और इसी कारण से उसकी माँ पार्वती उसे प्रसव के तुरन्त बाद मार डालना चाहती हैं, परन्तु डॉ. पैदरिक की करूणा उसे बचा लेती

हैं। वह पन्ना को किसी तरह राजी कर लेती है कि वह अपनी 'क्षणिक अतिथी पुत्री' की शुन्यता इस नवजात कन्या से भर दे। पन्ना इसे अपनी बेटी के रूप में अंगीकृत कर लेती हैं वह उसके जन्म से सम्बन्धित इतिहास को हमेशा गोपनीय रखती है। उस नवजात शिशु को लेकर पन्ना अपने निवास स्थान 'पीली कोठी' पर आ जाती है। नुपुर की झंकार तबले की थाप, सारंगी की संगत एवं विभिन्न राग-रागनियों के बिच उस बच्ची का शैशव किलकारियाँ भरता है। उसके आने से 'पीली कोठी' में एक हलचल-सी मच जाती हैं। पन्ना से भी अधिक प्रेम उसे वाणी सेन उसकी तानी मौसी से मिलता हैं। वाणी सेन अपना समस्त मातृत्व उस अबोध चंचला बालिका पर उड़ैल देती है। उसका यह कृष्णकली नाम भी वही उसके श्याम रंग को लक्ष्य करके गुरूदेव की एक रचना 'कृष्णकली' के आधार पर रख देती हैं। 'कली' उसका संक्षिप्त रूप है।

मुख्यपृष्ठ पर दिये गये वक्तव्य के अनुसार कृष्णकली ''शिवानी की लौहसंकल्पिनी मानस संतान है। एक अद्‌भूत चरित्र जो अपनी जन्मजात ग्लानी और अपावनता की कर्दभ में प्रस्फुटित होकर कमल-सा फूलता है; सौरभ से महकता हैं, और अपने मादक पराग से अपने सारे परिवेश को मोहाच्छन्न कर देता है।''[1]

कली के जन्म के विषय में पन्ना द्युितरंजन मजूमदार से बात करते हुए कली को उसकी बेटी सिद्ध करने का प्रयास करती हैं, परन्तु वह साफ इन्कार कर देता है पन्ना को इस बात से मानसिक आघात पहुँचता है और मजूमदार की ओर से भी उसका मोहभंग हो जाता है। माणिक एक व्यावसायिक बुद्धि वाली स्त्री थी, अतः कली के श्याम सलोने रूप का मुल्य वह मन ही मन आंक लेती है। वह उसे अपने भावी बुढ़ापे की शीतल छाया के रूप में देखती हैं। कली ने भले ही उसकी कोख से जन्म न लिया हो , पर वह कली को बहुत चाहती हैं। अतः नहीं चाहती कि

1. कृष्णक्ली- शिवानी- लेखकीय वक्तव्य से पृ-1

उसके विषाक्त जीवन का ग्रहण उसे भी लग जाये। परिणामस्वरूप होनों बहनों में काफी झड़प होती हैं। पन्ना रोजी (डॉ. पैदरिक) की सहायता से कली को एक पर्वतीय प्रदेश की कानवेण्ट के बोर्डिंग स्कूल में दाखिल करवा देती हैं. कली एक बहुत ही चंचल, उन्मत और स्वच्छन्द प्रकृति की लड़की हैं। कानवेण्ट की मदर उसके बारे में कहती हैं। ''लड़की की बनने-सवरने में जितनी रूचि हैं, उसकी आधी भी यदि पढ़ने में होती तो यह हमारे कान्वेट का नाम उज्ज्वल करती। ऐसी प्रखर बुद्धि की छात्रा हमारे कानवेण्ट में अर्से से नही आयी पर इस नन्हें प्रखर मस्तिष्क की कुटिल चाल देखकर में सहसा विश्वास नहीं कर पाती कि वह भोली वर्जिन मेरी जैसे चेहरे वाली बच्ची ऐसा कर सकती हैं।''[1]

कली की उक्त प्रकृति के पीछे कुछ मनोवैज्ञानिक कारण हैं। जिस प्रकार 'प्रेत और छाया' (इलाचन्द्र जोशी) के पारसनाथ को जब उसके पिता से ज्ञात होता है कि वह एक नाजायज सन्तान है तो उसके जीवन की समूची दिशा ही बदल जाती है और वह गुमराह हो जाता है। ठीक उसी प्रकार कली भी अपने जन्म से जुड़ी हुई गुत्थी को सुलझाना चाहती है। पर सुलझा नही सकती। उसके पिता के सम्बन्ध में जो रहस्यमयता फैल रही थी, उससे वह बुरी तरह से आक्रान्त थी। इस मानसिक तनाव के कारण वह अस्वाभाविक रूप से क्रूर, हृदयहीन एवं विद्रोहिनी बन जाती हैं। पन्ना के प्रति उसका व्यवहार अत्यन्त रूखा हो जाता है।

विद्युतरंजन मजूमदार के व्यवहार के कारण पन्ना पहले तो उसका तिरस्कार करती थी, परन्तु कुछ वर्ष बाद वह जब अपने जीवन की रामकहानी सुनाता है, तब पन्ना कुछ पिघलती है और उसके भीतर की कटुता कुछ कम हो जाती है। तब भावना के ज्वार में वह मजूमदार से कली के जन्म की सच्ची बात प्रकट कर देती हैं। जिसे अकस्मात आ गयी कली छिपकर सुन लेती हैं और इस प्रकार अपने जन्म

---

1. कृष्णकली- शिवानी- लेखकीय वक्तव्य से पृ- 55

के रहस्य को पा लेती हैं। अपने जन्म से जुड़ी यह वास्तविकता कली को बुरी तरह से झकझोरती हैं और वह सब कुछ छोड़ छाड़कर कलकत्ता चली जाती हैं। कलकत्ते में वह अपनी सहेली की एक आण्टी लौरिन आण्टी के यहाँ कुछ समय बिताती हैं। लौरिन आण्टी को भी कली जैसी लड़कियों की आवश्यकता थी, क्यों कि वे प्रत्यक्षतः तो पोल्ट्री-फार्म चलाती थी परन्तु उनका वास्तविक व्यवसाय तो तस्करी का था। अतः उनके यहाँ कली जैसी सोने का अण्डा देने वाली कई मुर्गियाँ थी, कली भी उनमें शामिल हो जाती हैं, परन्तु थोड़े ही समय में उनसे मुक्त हो जाती हैं।

उसके बाद वह बड़े-बड़े औद्योगिक संस्थानों में माडलिंग का काम करती हैं। तभी उसका परिचय एक सम्भ्रान्त पहाड़ी-परिवार से हो जाता है। यहाँ से प्रवीर, जया, माया, कुन्ती दामोदर आदि पात्रो से सम्बन्धित एक अन्य समान्तर कथा चल पड़ती हैं। कली कुछ दिन इलाहबाद में विवियन की आण्टी के पास भी रहती है। विवियन की आण्टी कली को बहुत प्यार करती है और उसे माँ का भरपूर प्यार देती है। उपन्यास में कली को माँ का वात्सल्य केवल तीन पात्रों से मिलता हैं - वाणी सेन, अम्मा (पहाड़ी परिवर वाली) और विवियन की आण्टी। प्रस्तुत उपन्यास में कली के अतिरिक्त उपन्यास के मध्य भाग से प्रविर तथा उसके परिवार की कथा भी जुड़ती है। प्रवीर एक तेजस्वी, प्रगल्भ तथा आई.सी.एस, केडर का उच्च पदाधिकारी हैं। काबुल के विदेश मंत्रालय में भी वह कुछ समय के लिए रह चुका था। पत्नी के सम्बन्ध में उसके विचार काफी ऊँचे थे। अतः एक लम्बे अरसे तक वह अविवाहित रहता हैं। कली की तेजस्विता, सौन्दर्य, चंचलता, बुद्धिमता आदि से वह प्रभावित तो रहता है, परन्तु अपने पूर्वाग्रहों के कारण वह उससे कुछ खींचा-खीचा सा रहता हैं। क्यों कि कली से उसका प्रथम परिचय कुछ विचित्र सी कही जाय ऐसी परिस्थितियों में हुआ था, जब कली लौरिन आण्टी के लिए सोने

की तस्करी में व्यस्त थी। प्रवीर के कली के प्रति जो पूर्वाग्रह थे वे बाद में निरस्त हो जाते है। परन्तु तब तक काफी देर हो चुकी थी। प्रवीर पाण्डेय परिवार का दामाद बन चुका था। कली भीतर ही भीतर प्रवीर को चाहने लगी थी। अतः इस आघात को भूलाने के लिए वह फिर एक अनचिह्नितयायावरी यात्रा के लिए चल पड़ती है। किसी नौकरी के सिलसिले में वह सिलोन भी जाती है। तब रास्ते में उसकी मुलाकात अचानक वाणी सेन से हो जाती हैं। कली रास्ते में ही कही उतर जाती है।

उपन्यास के अन्त में हम कली को इलाहबाद वाली विवियन की आण्टी के पास पाते है। वहाँ कली असाध्य रोग से पिड़ित हो जाती हैं।

पन्ना और प्रवीर भी वहाँ पहुँच जाते हैं। उनके सानिध्य में वह अपने जीवन की आखिरी सांस लेती हैं। प्रवीर दूसरे दिन जाने वाला था, अतः नींद की गोलीयाँ खाकर वह अपने भविष्यत मृत्यु क्षण को कुछ समय पूर्व ही आमंत्रित कर लेती हैं।

भैरवी – (1969)

भैरवी उपन्यास की नायिका चंदन और उसकी माँ कुमाऊँ के पहाड़ी प्रदेश में रहती है। भैरवी में पूर्वी उत्तर प्रदेश के निविड़ वन अंचल को लिया गया हैं और साथ ही महानगर दिल्ली का परिवेश भी दिखाया गया है। दिल्ली का परिवेश सम्पूर्ण उपन्यास में एक चौथाई से भी कम हैं। सम्पूर्ण कथा चन्दन की स्मृति कथा के रूप में लिखी गई हैं। चंदन की माँ राजेश्वरी एक मिशनरी स्कूल में अध्यापिका के पद पर कार्य करती है। चंदन एक सुशिक्षित एवं अनिन्ध सौंदर्यमयी युवती हैं। राजेश्वरी उसके विवाह को लेकर चिन्तित हैं और इसलिए वह उसे पहाड़ो में लेकर आती हैं।

विक्रम एक अत्यन्त सम्पन्न परिवार का बिगड़ा हुआ युवक हैं। वह एक टूर में अपने साथियों के साथ पहाड़े में गया था। वहाँ अचानक मौसम बदल जाता है आँधी तुफान शुरू हो जाता हैं और उन्हें सिर छुपाने के लिए राजेश्वरी के यहाँ

आश्रय लेना पड़ता हैं। राजेश्वरी की बेटी चन्दन को एक नजर देखकर वह दिवाना हो जाता है और घर पहूँचकर अपनी माँ और बहन को रिश्ते के लिए चन्दन के घर भेज देता हैं।

घरपरिवार अच्छा देखकर राजेश्वरी इस रिश्ते को ठुकारा नही पाती हैं और स्वीकार कर लेती हैं । चन्दन और विक्रम का चट मंगनी पट ब्याह हो जाता हैं। चन्दन ससुराल पहुँच कर सास-ससुर, पति, ननद, सबका दिल जीत लेती हैं। कुछ दिनों के बाद विक्रम चन्दन को लेकर कलकत्ता के लिए निकल पड़ता है जहा उन दिनो उसकी पोस्टिंग थी। ट्रेन में रात के समय तीन चार युवको का दल उस डिब्बे में चढ़ जाता है जहाँ नव दम्पति चन्दन और विक्रम बैठे हुये थे। उन्होने डिब्बे में घुसते ही चन्दन के साथ छेड़खानी शुरू कर दी यह देखकर विक्रम उनसे लड़ने लगा लेकिन उन सब ने लात-घूसें मार-मार कर विक्रम को बेहोश कर दिया। जब चन्दन अपने बचाव का कोई रास्ता नही देखती है तो वह मध्य रात्रि में चलती ट्रेन से कुद पड़ती है।

आँखे खुलने पर वह अपने आपको एक कापालिक भैरवानन्द अघोरी के अखाड़े में पाती है।

भैरवानन्द और उसकी शिष्या माया उस निर्जन भयावह जंगल में जलती चिताओं के सामने बेठकर तंत्र साधना करते है। भैरवानन्द की दासी चरन भी उसी अखाड़े में रहती है। माया एक बाल-विधवा थी। पहले वह एक कनकटे नाथ जोगी के घर बैठी थी बाद में कुंभ मेले में भैरवानन्द से मंत्रमुग्ध होकर उनके साथ-साथ चली आयी थी। अफीम और चरस के नशे में माया कई-कई दिनों तक बेहोश पड़ी रहती हैं। भैरवानन्द और माया साधना करने के लिये कई दिनों तक गायब हो जाते है। वहाँ का वातावरण रहस्मय और बड़ा ही विचित्र था। चरण तो एक दिन मौका पाकर श्मशान में चाय बनाने वाले खेपा के साथ भाग जाती है। भैरवानन्द चन्दन

की ओर आकृष्ट होने लगता है और उसे नई भैरवी बनाने का निर्णय ले लेता है जब माया को इस बात का पता चलता है तो वह चन्दन को सचेत करते हुये बताती है - ''तू तो एक दम भोली है भैरवी ! अनर्थ होते देर नही लगती। मर्द का मन, चाहे वह लाख, साधे, औकात में होता है एकदम देशी कुत्ता! सामने हड्डी रख दो तो कितना ही सिखाया पढ़ाया हो कभी लार टपकाए बिना रह सकता है?''[1]

एक दिन इसी बात को लेकर भैरवानन्द और माया में झगड़ा भी हो जाता हैं। जब भैरवानन्द को लगता है कि माया चन्दन को उसके करीब नही आने देगी तो वह अपने पालतू नाग से उसे डसवा देता है। भैरवानन्द माया की मृत्यु के बाद उसके शव को जल समाधि देने निकल पड़ता है। चन्दन के कमरे को बाहर से बन्द कर जाता है। यह सब देखकर चन्दन के मन में स्वामी को लेकर शंका पैदा हो जाती है। और वह वहाँ से भागने का निर्णय ले लेती है। खिड़की से भागकर वह किसी प्रकार दिल्ली पहुँचती हैं।

वहाँ जाकर उसे पता चलता है कि विक्रम ने दूसरी शादी कर ली है। और उसी दिन विक्रम की पत्नि एक बच्चे को जन्म देती है। यह सब देखकर वह चुपचाप वहाँ से चल देती हैं।

श्मशान चम्पा - (1972)

यह एक प्रतिकात्मक उपन्यास हैं। उपन्यास का कथासूत सामाजिक अंचल पर आधारित है। इस उपन्यास में एक ऐसी आत्मरूद्ध युवती की कथा को दर्शाया गया है जो हर मोड़ पर ठगी जाती है। अच्छे कर्म और निष्ठा के बाद भी उसे समाज में यातना का भोगी बनना पड़ता है। उसके जीवन में कई ऐसी घटनाएँ होती है जिनमें वह पूर्णतः निर्दोष दोते हुए भी दोषी समझी जाती है। और उसे समाज के लांछन सहने पड़ते हैं उसे कलंकित किया जाता है। पूरा उपन्यास संवेदनशील एवं

1. भैरवी- शिवानी पृ- 117

गहरी वेदनाओं से भरा हुआ है। पिता का कलंक बहन का मुस्लिम युवक के साथ भागना तथा अपनी सगाई टूट जाना इन सभी बातो से उसे गहरा आघात पहुँचता है और वह शहर छोड़कर एकान्त स्थल पर चली जाती है। इन सभी घटनाओं के लिए वह स्वयं जिम्मेदार नही है फिर भी उसके साथ ये घटनाएँ दुर्भाग्य की तरह जुड़ जाती है।

जब वह शहर छोड़कर एक निर्जन स्थान पर डाक्टर की हैसियत से आती है तो वहाँ भी उसके साथ विचित्र घटना घटती हैं। उसकी बहन जूही जिसे अपने पति से संतोष नही था फिर भी अन्य पुरूष से सम्बन्ध की अनुमति थी वह अपना पाप धुलवाने डाक्टर चम्पा के पास आती है। चम्पा उसे पहचान कर भाग निकलती हैं। अंत में अपने सौभाग्य को ठोकर मारकर वही लौटती है। कुछ घटनाक्रम इस तरह के बनते चले जाते है कि चम्पा सेन गुप्त की सम्पत्ति की वारिस बन जाती है। लेकिन यह सम्पत्ति भी उसके लिए दुखों का भण्डार लेकर आती है। अंत में उसे केनाराम की अधम दासी बनने से ही छुटकारा नहीं मिलता अपितु 'वेश्या की दत्तक पुत्री' का खिताब भी मिल जाता है। चम्पा के जीवन में सुख आने से पहले ही दुखो का प्रवेश हो जाता हैं। सांसारिक सुख ऐश्वर्य की आकांक्षा होते हुए भी वह अनिष्चित कालके लिए प्रतिक्षा रत रहती है। इस उपन्यास में शिवानी ने दो पीढ़ियों का संघर्ष बतलाया है आधुनिक और पहाड़ी समाज के बीच चम्पा के व्यक्तित्व का पराक्रम करूणाजनक है, संवेदना जगाता हैं और जिन परिस्थितियों के कारण ऐसा हुआ उसके लिए सोचने को बाध्य करता है, सौन्दर्य और शालीनता के अभिमान मे़ दुनिया को तुच्छ समझने वाली इस अतिशय संवेदनशील युवती चम्पा का मार्मिक चित्रण यहाँ प्रस्तुत हैं। वह अंत में श्मशान चम्पा नाम से अभिशप्त हो जाती है। उसके लिए यह नाम सार्थक हो जाता है।

''चम्पा तुझ में तीन गुण,रूप, रंग अरू बास

एक अवगुण है तेरो भँवर ना आये पास।''[1]

श्मशान चम्पा में शिवानी ने देश की वर्तमान स्थिति, राजनीति और उसके प्रभाव को बड़ी मार्मिकता से रेखांकित किया है। भ्रष्टाचार के आरोप में चम्पा के पिता को नौकरी से 'सस्पेंड' किया जाता है वे निराश्रित हो जाते हैं।

लगता है भ्रष्टाचार किसी महामारी की भाँति पूरे प्रदेश को अपने मुँह में ले चुका था। श्मशान चम्पा में कुमाऊँ की सामाजिक परम्पराओं और विवाह प्रथा का अत्यन्त सफल चित्र प्रस्तुत है। जूही का अन्तर्जातीय विवाह का भी वर्णन देखने को मिलता है जो समाज में विवाह परम्परा का बदलता हुआ रूप स्पष्ट करती है। श्मशान चम्पा में जूही और चम्पा दोनों बहनों के विरोधी रूप को दिखाया है। दोनो. के विचार भी भिन्न-भिन्न है। जूही अपने प्रेमी के साथ भाग जाती है। बाद में रिन्नी खन्ना नाम से कैवरे डान्सर बन जाती है।

चम्पा का चरित्र उज्वल है लेकिन फिर भी वह खुश नहीं हैं। वह आत्मरूद्ध संवेदनशील और कर्तव्य परायण नारी है। इन विविध परिवेशी, पात्रो को लेखिका ने डॉ. चम्पा के माध्यम से एक कथा-सूत्र में पिरोया है।

सुरंगमा - (1979)

सुरंगमा एक नारी प्रधान सामाजिक उपन्यास है। इस उपन्यास में स्त्री चरित्रो के मानसिक तनाव को मनोवैज्ञानिक तरीके से अभिव्यक्त किया है। उपन्यास में दो कथाएँ साथ-साथ चलती हैं। नाबालिग लक्ष्मी भागकर अपने ही संगीत मास्टर जो उससे उम्र में काफी बड़ है शादी कर देती हैं। वह लक्ष्मी को बहुत यातनाएँ देता है रोज पिकर उसे मारता एक दिन लक्ष्मी हिम्मत करके वहाँ से भाग जाती है। जिस समय वह भागती है उस समयं वह गर्भवती होती है। इस बात का पता उसे भी नही होता है। उसकी सन्तान अवैध ना कहलायें उसे समाज में

1. श्मशान चम्पा- शिवानी- वक्तव्य से-

सम्मान प्राप्त हो इसके लिए वह रोबर्ट से शादी का समझौता कर लेती है। इसी रोबर्ट ने लक्ष्मी की जान भी बचाई थी। इसी लक्ष्मी की संतान सुरंगमा होती है जो अपनी माँ की तरह ही सभी दुख झेलती है और आजीवन कुवाँरी रहने का संकल्प करती है। किन्तु अपनी शिष्या मीरा के पिता मंत्री दीनकर से प्रेम करती हैं। जिसका परिणाम शुन्य ही रहता है। कथा प्रवाह में कभी-कभी रूकावट आती है क्यों कि सभी पात्रों के अतीत की स्मृतियाँ उनके पूर्वजीवन तथा अनावश्यक प्रसंगो की चर्चा और संगीत का गहराई से किया गया चिंतन-वर्णन प्रस्तुत हैं इससे कथा प्रवाह बोझिल हो उठता हैं। सुरंगमा को धीरे-धीरे इस बात का अहसास होने लगता है वह अपने सतमुखी विनिपात के भंवरजाल में गले तक डूब गई है और नियति उसे निरन्तर गहराई में खीचंती चली जा रही हैं।

रतिविलाप - (1977)

यह उपन्यास एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। इसके पात्र सहज और सरल होते हुए भी अपने आंतरिक चरित्र से चौंका देने वाले है। इस उपन्यास में नियति के चक्र में फँसी एक नारी ने जीवन के उतार चढ़ावों का मार्मिक चित्रण किया है। यहाँ पर नायिका के संघर्षमय जीवन को उद्‌घृत किया है।

''विवेक शील पुरूष को भी कभी-कभी नारी अपनी नन्ही तर्जनी पर कैसे नचाती है।''[1]

इस सत्य की विवृत्ति के लिए ही मानो शिवानी ने 'रतिविलाप' उपन्यास की रचना की हैं।

करनदास भोगीदास कापड़िया एक समृद्ध, धनाढ्य, त्यागी, तपस्वी, सत्यनिष्ठ तथा वचनपालक वृद्ध सज्जन हैं। पत्नी की मृत्यु के उपरान्त वह साधनामय जीवन व्यतीत करता हैं। उसका पुत्र विक्रम दिखने में 'ग्रीक देवता' के समान सुन्दर तथा

1. रतिविलाप- शिवानी- पृ-32

बलिष्ठ होते हुए भी मिरगी के रोग से ग्रस्त हैं। पुत्र से अपार स्नेह होते हुए भी वह किसी युवती को छलपूर्वक अपनी पुत्रवधू बनाना समुचित नही समझता। अतः वह लड़की के मामा को सब कुछ बता देता हैं, तथापि धन लोलुप मामा अपनी भांजी का विवाह विक्रम से करवा देता है और अपनी भांजी को इस बिमारी के बारे में कुछ नही बताता है। पुत्र की आकस्मिक मृत्यु होने के बाद वह अपनी पुत्रवधु को हाथ-खर्ची की रकम देने का वादा करते हुए उसे अपने मामा के यहाँ जाने के लिए कहते है, परन्तु पुत्रवधु अनुसूया श्वसुर गृह में रहना पसन्द करती है। कापड़िया अपनी वुत्रवधु को समझाते हुए कहते हैं-''मेरा वैभव, तुम्हारी कच्ची उम्र का वैधव्य, तुम्हारा सौन्दर्य कभी भी हम दोनों पर घातक हथगोला फेक सकता हैं। समाज तो सगे भाई-बहन के एकान्तवास को भी कभी अच्छी दृष्टि से देख नही सकता।''[1] परन्तु अनुसूया टस से मस नहीं होती। फलत अपनी पैतृक सम्पत्ति का भवन बेचकर कापड़िया अपनी पुत्रवधु को लेकर बंबई चले जाते हैं और पुत्री समान पुत्रवधु को व्यापार में लगाते है तथा स्वयं एक गृहिणी की भाँति उसकी सार संभाल तथा सेवा करते हैं। परन्तु एक बार अनुसूया जेल से छूटी हीरा नामक एक पतिहंता युवती को नौकर रखने हेतु ले आती हैं। कापड़िया पहले तो मना करते हैं फिर बहु के अत्याग्रह पर उसे रख लेते हैं। एक बार अनुसूया को व्यापार के सिलसिले में कुछ दिनों के लिए बाहर जाना पड़ता हैं। लौटने पर उसे एक संक्षिप्त-सा पत्र मिलता हैं। कुछ दिनों बाद बनारस के एक होटल में एक वृद्ध का खून से लथपथ शरीर पाया जाता हैं। उस युवती का कही पता नही चलता हैं।

विषकन्या - (1977)

शिवानी का चरित्रगत विसदृशता (कोन्ट्रास्ट) को रूपायित करने वाला उपन्यास हैं। रोहित बर्माशेल में एक उच्च अधिकारी होते हुए भी एक निष्ठ प्रेमी और

1- रतिविलाप -शिवानी - पृ-17

सचरित्र व्यक्ति हैं। उसका विवाह दामिनी नामक एक युवती से होता हैं। दामिनी की एक जुड़वा बहन कामिनी हैं जो हूबहू दामिनी जैसी दिखती हैं। कामिनी उच्च चरित्र की लड़की नही हैं वह अपने रूप और यौवन का गलत फायदा उठाती हैं यहाँ तक कि वह अपने जीजा रोहित पर भी डोरे डालती हैं, पर रोहित की प्रेमनिष्ठा दामिनी और कामिनी के अन्तर को पहचान लेती है। अतः कामिनी अपनी चाल में सफल नही हो पाती और रोहित कामिनी के षडयंत्र में नही फँसता। रोहित की जगह कोई दूसरा आदमी होता तो इस परिस्थिति का पूरा फायदा उठाता पर रोहित ने ऐसा नही किया। एक दिन कोबरा के डसने से रोहित की मृत्यु हो जाती है। कामिनी एक एयर होस्टेस हैं। डिसूजा पायलेट हैं वह जब फ्लाईट में होता है तो कामिनी को छेड़ता रहता हैं। वह एक यौन क्षुधातुर व्यक्ति हैं। वह कामिनी पर मोहासक्त है, पर कामिनी उसे नही चाहती हैं। एक विमान दुर्घटना में डिसूजा और कामिनी साथ होते हैं पर किन्ही कारणों से वे दोनों बच जाते हैं, तब ऐसे विभस्त भयंकर परिवेश में भी, जहाँ लाशों पर चील कौए मंडरा रहे थे, डिसूजा को अपनी यौन-क्षुधा के तुष्टिकरण से आनन्द होता है। वह बहुत प्रसन्न होता है कि अब उसे उसकी मेडोना कामिनी मिल जायेगी जिस पर वह बहुत समय से नजरें जमाये बैठा था।

अन्त में एक झील का विषैला पानी पीने से उस काम बूभुक्षु की मृत्यु होती हैं।

रश्या – (1977)

शिवानी की सहज और सरलता का आकर्षक रूप इस रचना में देखने को मिलता हैं।

'रश्या' एक अल्हड़ ग्रामीण युवती की अन्तर के दर्द की कसक भरी कहानी हैं।

शिवानी ने कथानक के दो विरोधी बिंदु यथार्थवाद और आदर्शवाद के

मिश्रण से उपन्यास को अधिक रसप्रदता प्रदान की है। रश्या यानि वेश्याओं के मौहल्ले तक जाने वाली पतली सड़क। बसंती के घर तक जाने वाली सड़क को 'रश्या' नाम दिया था विमलानन्द ने। शिवानी ने इस युवती के दर्द को बड़ी मार्मिकता के साथ उभारा है।

कैबरे नर्तकी बन अत्यन्त वैभव के बीच भी रोती ही रहती हैं। किसी अन्तस के बंसती कोने से बैठे प्रेमी से ठुकराये जाने पर जीवन की परिणति इतनी भयानक हो सकती हैं यह इस लघु उपन्यास में देखा जा सकता है। यह एक नारी प्रधान मनोवैज्ञानिक कथा हैं। जो सामाजिक धरातल से उठती हैं। इसमें दिखाया हैं कि एक आदर्श शिक्षक भी अपनी प्रेमिका के मोह में रात-दिन जकड़ा रहता हैं। अन्त में उसका आदर्शवाद जाग उठता है। लेकिन स्वाभिमानी प्रेमिका भी अपना यथार्थपूर्ण व्यंग बाण चलाती हैं।

''छिपकर जूठन खाना हैं छोटे वैद, भाई-बिरादरी के सामने जूठी-पत्तल में खा पाओगे बोलो ?''[1] इस उपन्यास में एक अल्हड युवती के साथ-साथ ''एक ऐसे ग्राम्य युवक की कहानी हैं, जो अपने प्रति किसी युवती के असीम प्रेम को पहचान तक ना सका।''[2]

बसन्ती खो गई थी। छोटो वैद्य विमलानन्द से निराश होकर और विमलानन्द को यह विश्वास था कि गाँव में आयी हुयी सरकस की छोकरियों के साथ फुसलाकर इसे ले जाया गया हैं।

'रश्या' एक ऐसी कथा है जो प्रत्येक सहृदय और संवेदनशील पाठक को व्यथित कर डालने में पूर्ण समर्थ हैं। शिवानी का यह लघु उपन्यास निसंदेह एक सशक्त साहित्य कृति होने के साथ-साथ अत्यन्त रोचक भी है।

1- रश्या- शिवानी- पृ. 85

2- रश्या- शिवनी- आवरण पृ-से

रचना की संप्रेषणीयता उल्लेखनीय हैं।

माणिक – (1977)

माणिक शिवानी के अन्य लघु उपन्यासों की तरह एक अविवाहित बड़ी बहन की करूण कहानी हैं। इस करूण कहानी में बड़ी बहन के त्याग और उसकी तपस्या पाठको को द्रविभूत कर डालती है। किन्तु इस त्याग तपस्या मूर्ति का दूसरा रूप भी बडी सहजता से रचना में चित्रित किया गया है। ऐसे स्थलों पर नारी मन की दबी हुई यौन वृत्तियाँ अदभूत कुण्ठा के रूप में अभिव्यक्त हुई हैं। वास्तव में यह एक आधुनिक किन्तु अत्यन्त बुद्धिमान और ठग युवती के अपूर्व कौशल्य की रोमांचक और रोचक कथा हैं। कथा प्रवाह वैयक्तिकता से रोमांटिकता की ओर बढ़ती हैं। शहर से दूर रहने वाली नीलम की ढलती उम्र में दमित इच्छाएँ और स्वछन्द यौन वासनाएँ जागृत हो उठती हैं।

दीना स्वछन्द यौवना उसे स्नेह जता कर दम्पत्ति सा व्यवहार करती हैं। इस युवती के बारे में नौकरानी बताती हैं-''मेवे कुटकर बाल धोती हैं। अण्डे की जर्दी और न जाने क्या-क्या मलती है बालों में। ऐसी सिगरेट फूँकती है कि क्या बताऊँ? सच कहूँ तो मुझे लगता है, यह हमारी मालकिन को ठगने साड़ी पहनकर कोई बम्बई का ठग चला आया हैं।''[1] अन्त में दीना सब कुछ ठग कर नीलम, और और उसकी नौकरानी की हत्या कर चम्पत हो जाती हैं। इस कहानी के द्वारा 'नीलम' पात्र को लेकर समाज में बड़ी बहन की पारिवारिक फर्ज और संयम तथा अनुशासित जीवन का परिचय दिया हैं। साथ ही साथ दीना बाटलीवाला के चरित्र द्वारा यह सिद्ध कर दिखाया है कि चतुर ठग वही हैं जो कठोर, अनुशासित तथा संयमित व्यक्ति को भी परास्त कर देता हैं। कहानी का मूल उद्देश्य यही है कि संयम के नाम पर दबाई गई यौन-भावना से बचना बहुत मुश्किल हैं। वह जीवन के किसी

1- माणिक - शिवानी- पृ-28

भी मोड़ पर उभर कर बाहर आ सकती हैं।

किश्नुली – (1979)

इस उपन्यास में शिवानी ने एक विशिष्ट चरित्र को उजागर किया हैं। इस उपन्यास में किशोरवय की उन्मादिनी किश्नुली के जीवन को बड़ी ही मार्मिकता से प्रस्तुत किया हैं। शिवानी ने बताया है कि सैक्स प्रत्येक जीवों का अभिन्न अंग हैं फिर वह चाहें पागल हो या सदाचारी व्यक्ति सभी के अन्दर यह किसी न किसी रूप में विद्यमान रहता हैं। किश्नुली जैसी पागल लड़की के अन्दर भी प्रेम और आकर्षण का बीज छुपा हुआ हैं। शिवानी के अन्य उपन्यासों इस उपन्यास का नारी चरित्र अपनी अलग ही विशिष्टता रखता हैं।

शास्त्रीजी संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित धार्मिक प्रवृति वाले और सदाचारी व्यक्ति हैं। शास्त्री जी की पत्नी भी उन्ही की तरह सदाचारी हैं। पंण्डिताईन पतिव्रता स्त्री है वह निःसन्तान होते हुए भी वात्सल्यमयी और स्नेहयुक्त नारी हैं। पण्डिताईन ही गाँव में आई हुई पगली किश्नुली को अपने घर में आश्रय देती हैं। वह किश्नुली को अपने घर में आश्रय देती हैं। वह किश्नुली को अपनी पुत्री की तरह प्रेम करती हैं। वह पूरे गाँव और अपने पति का विरोध होते हुए भी किश्नुली को घर में रख लेती हैं। एक दिन किसना घर छोड़कर चली जाती हैं। फिर किश्नुली काफी समय बाद घर लौटती है तो वह गर्भवती होती हैं।

लेकिन फिर भी पण्डिताईन उसे अपने घर में रख लेती है यह देख कर पूरा गाँव शास्त्रीजी के घर का बहिष्कार कर देते हैं। किश्नुली की संतान पूत्र होती है उसका नाम करण रखा जाता हैं। पण्डित जी श्री हीन होने के कारण घर छोड़ कर चले जाते हैं लेकिन उन्हें कभी भी कही भी शान्ति प्राप्त नहीं होती हैं इसीलिए वह मरने से पहले पत्र द्वारा अपनी शिष्या को सब कुछ बता देते हैं कि किश्नुलि की सन्तान अवैद्य नहीं हैं बल्कि मेरा ही पाप हैं। वह चाहते कि उनकी शिष्या जो

लेखिका हैं उसकी पत्नी को जाकर यह बात बता दें। लेकिन लेखिका की हिम्मत नही होती हैं कि वह पण्डिताईन जैसी पतिव्रता नारी के विश्वास को तोड़ दे।

कहानी मनोवैज्ञानिक होते हुए भी एक ही अंचल पर चलती हुई आँचलिक कही जा सकती हैं। इस प्रकार बड़ी मार्मिकता से लेखिका ने रोमान्स व सैक्स की ओर अल्प संकेत किया हैं।

कृष्णवेणी – (1981)

कृष्णवेणी उपन्यास शिवानी का एक मौलिकएवं मनोवैज्ञानिक उपन्यास हैं। इस उपन्यास में लेखिका ने परलोक की अत्माओं का पृथ्वी लोक के मानवियों के साथ मिलन की कल्पना की हैं। परलोक की आत्माओं के बारे में लेखिका पुष्टि भी करती हैं।

'कृष्णवेणी' एक ऐसा ही पात्र है जिसके माध्यम से लेखिका यह सिद्ध करवाना चाहती है कि सिर्फ आठ वर्ष की उम्र से ही भविष्य जानने की अद्‌भूत शक्ति से वह सभी की प्रियपात्र बनती हैं।

प्रीन्स की जीत, मामा का पागलपन, प्रेमी भास्करन का कोढ़ी बनना आदि अनेक संकेत उसी ने ही अपनी दैवीय शक्ति से किये थे।

इस कहानी में एक विचित्र सामाजिक रिवाज की पुष्टि की गई हैं। इस रिवाज के अनुसार लड़की का ब्याह मामा के साथ होता हैं।

पाखण्डी भविष्यवेता के बारे में भी निजी उदाहरण दिया हैं कि जिसके रूम में से शराब की बोतले निकाली गई उस पाखण्डी ने शिवानी का अपना भविष्य दिखाने अपने कमरे में बुलाया था पर कृष्णवेणी द्वारा ही वह बच पायी।

शिवानी ने अपनी रोचक बेजोड़ लेखनी को भी कृष्णवेणी की ही देन माना है।

तभी तो वह कहती है कि - ''वस्त्र चयन में ही नही पुस्तक चयन में भी

उनकी रूचि बेजोड़ थी। आज जब मेरी लेखनी अविराम गीता से सब लिखती हैं तो में उसका असीम कृतज्ञता पुर्वक स्मरण करती हूँ। जिसने इस लेखनी को सहज गति दी हैं, उसने ही मुझे अंगुली पकड़कर साहित्य के सुरम्य नन्दन कानन में पहुँचाया था, यह थी कृष्ण वेणी।''[1]

कथा प्रवाह सिर्फ एक ही चेतना को स्पष्ट करता हैं वो हैं भविष्य कथन और परलोक की आत्मा। कृष्णवेणी द्वारा की गई सभी घोषणाएँ सत्य थी किन्तु अचानक समुद्रतट पर पीली साड़ी पहनकर मिली हुई क्या कृष्णवेणी की परलौकिक आत्मा थी?

कहानी कृष्णवेणी को केन्द्र में रखकर चलती हुई वैयक्तिकता की ओर बढ़ती हुई आँचलिक मनोवैज्ञानिक कहानी हैं। लेखिका की अनेक कहानियों में कुष्ठरोग पर निर्देश मिलता, यहाँ पर भी यही चित्रित किया गया हैं।

गैंडा – (1981)

'गैंडा' शिवानी का अद्यतन लघु उपन्यास हैं। 'गैंडा' एक सुशिक्षित आधुनिका युवती की अन्तर्मन की पीड़ा की कसक से भरी मनोव्यथा हैं। यह एक ऐसी नारी की कथा है जो किसी भी संवेदनशील हृदय को व्यथित कर डालने में पूरी तरह समर्थ हैं। शिवानी के लेखन ने कुछ ऐसे चरित्र दिये है जो सहजता से भुलाये नहीं जा सकते। शिवानी ने नारी के परिवेश की विभिन्न समस्याओं के विविध पहलुओं को गहराई के साथ देखा है। और उसे यथार्थ के धरातल पर पूरे साहस के साथ प्रस्तुत किया है। आज के व्यस्त जीवन में नारी के वास्तविक यथार्थ को अभिव्यक्त किया हैं। शिवानी ने, जिसे आमतौर पर कोई देखता नही हैं। 'गेंडा' कहानी हैं सुवर्णाक्ष्ता जबकि इसका नामकरण सुवर्णा की सहेली राज के पति वेद के व्यक्तित्व को देखकर किया हैं। राज ने ही उसे यह नाम दे रखा हैं। उसने अपनी बेटियों का

---

1. कृष्णवेणी- शिवानी- पृ-23

उल्लेख करते हुए सुवर्णा से कहा था।

''दोनों चुडैल अपने बाप पर पड़ी है बेटा भी होता तो क्या पता बाप पर ही पड़ता। एक और गैंडे को पृथ्वी पर लाकर करना भी क्या।''[1]

गैंडा में दो विभिन्न प्रवृत्तियाँ, स्वभाव, रूचि और आदत की दो नारियों के चरित्र को विविध स्थितियों के संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है। दोनोने के.जी से लेकर सीनीयर कैम्ब्रिज तक साथ-साथ शिक्षा प्राप्त की थी। किन्तु इस सह शिक्षा में सदा ही द्वितिय पुरस्कार मिला सुवर्णा को। किन्तु दोनों में गहरी प्रतिद्वन्द्वता होने के बावजूद दोनों की मैत्री अन्ततक अक्षुष्ण रही थी। पर जीवन की भाग दौड़ में सुवर्णा को कभी लगा नही था कि राज यहाँ पर भी उसे पराजित कर देगी। सुवर्णा का विवाह हुआ था मेजर दत्ता से जिसे अपने पद पर गर्व था और जिसका व्यक्तित्व उस पद के समान ही गौरवशाली था। अपने दो बच्चों के साथ खुशहाल जीवन बिताती रही थी सुवर्णा। अचानक उसके जीवन में बचपन की सखी राज आ गई। और परिस्थितयाँ एवं घटनाएँ कुछ ऐसी हुई कि राज को सुवर्णा के घर पर रूकना पड़ा। राज किसी आलीशान होटल में रिशेप्निष्ट थी। सुवर्णा के घर रहते0रहते ही उसने सुवर्णा के पति रोहितास्व को अपने वश में कर लिया था। थी भी वह अनन्त सौन्दर्य शालिनी।

''विवेकी से विवेकी पुरूष की नरता, शोर्य, बल, सौतत्व को वह अपनी असक्त अंगुलियों से पिस्सू सा ही मसल सकती थी।''[2]

मेजर रोहिताश्व जैसे भरे पूरे व्यक्तित्व भी उसके सौन्दर्य के लालची बने तो क्या आश्चर्य और फिर इसी राज को, जिसने सुवर्णा के पति को सुवर्णा से भिन्न किया, सुवर्णा इन सारी बातों को धीरे-धीरे जान गयी। पर उसके पास कोई मार्ग

1- गैंडा- शिवानी पृ- 37

2- गैंडा -शिवानी पृ- 24

नहीं था। उसने प्रयत्न भी किया। वेद को समझाने के लिए वह समय निकाल कर वेद से कहती भी हैं।

"राज मुर्ख थी ही पर तुम भी इतनी बड़ी मुर्खता करोगे यह मैंने कभी नहीं सोचा था।छिः छिः उस दो कौड़ी की नौकरी के लिए वह तुम्हें किस दुस्साहस से छोड़ रही हैं। अभी भी कुछ नही बिगड़ा है वेद घर जाकर उसे समझाओ और साथ ले जाओ।"[1] किन्तु सुवर्णा के कहने पर भी राज कब मानने वाली थी। वह वहीं रही इसका पता न सुवर्णा को था न रोहित को।

सुवर्णा की सहनशक्ति के बाहर सब हो रहा था। अपने ही पति को वह अपनी आँखो के सामने किसी और की बाहों की तलाश में देख रही थी। अतः अन्त में उसने ऐसा रास्ता अपनाया जो नारी के चिरपरिचित स्वरूप को सामने रखता हैं। वह नीम तले के मौलवी के पास गई और वहीं से एक ऐसा कराज लायी जिसे एक बार लांघा जाना चाहिए बड़े साहब ने उसको गाड़ा था। सुवर्णा की आँखो के सामने लाँधा था राज ने उसे और मौलवी साहब के शब्द याद आये "अगर एक बार लांघ गई तो इन्सा अल्लाह महीना बीतते तुम अपनी चीज पा लोगी।"[2]

और हुआ कुछ ऐसा ही था। रोहित को उस पर शक है किन्तु वह निर्दोष हैं।

तीन दिन के बाद वेद आया उसे सारी घटना मालुम हुई और वह शान्त होकर सुनता रहा। उसने राज की सारी चीजे गरीबों को बाँटने के लिए कहा और निकल गया किन्तु उसके जाने के बाद सुवर्णा को लगा "प्रवास के किसी जनशुन्य अरण्य में भटक रहा आज का घायल गैंडा अपनी आहत दृष्टि से उसे देख रहा है। पहले उसके होंठ काँप रहे है, फिर आकारहीन चिबुक, फिर परस्पर जुड़ी

1- गैंडा- शिवानी - पृ. 22
2. गैंडा -शिवानी पृ- 34

अनाकर्षक घनी भौंहे और फिर वह निष्कपट बदनुमा चेहरा रूदन की सहस विकृत झुर्रियों में एक दम ही सिकुड गया।''[1]

सुवर्णा का यह अहसास कहीं न कहीं मन के भीतर छुपे हुए अपने अपराधी होने की किंचित शंका के कारण हैं। सम्भवतः यह आहत गैंडा सुवर्णा को सदा स्मरण होता रहेगा।

चल खसरो घर आपने - (1982)

चल खुसरो घर आपने नामक उपन्यास में शिवानी ने नाटकीय स्थितियों और चित्रोपम वर्णनों से एक काव्यात्मक संवेदन प्रदान किया हैं।

इस उपन्यास का मनोविश्लेषण और चित्रांकन भी बेजोड़ हैं। इस उपन्यास में एक ऐसी नारी की कथा है जो सेवा, कर्तव्य बोध और सामाजिक बन्धनों के बीच जकड़ी हुई हैं। इसमें एक शिक्षिता नारी के अन्तर्द्वन्द्व की मर्मकथा स्पष्ट की गई हैं। इस उपन्यास की नायिका कुमुद पर ही छोटी बहन उमा, भाई लालू और मम्मी की जिम्मेदारी हैं। कुमुद परिश्रम करके अपनी सभी जिम्मेदारीयाँ निभा रही थी लेकिन अपनी छोटी बहन उमा के अनिती धाम के कलंक एवम् अपने लोफर और गंजेडी भाई के कारण वह एक विज्ञापन देख कर बहुत दूर नौकरी करने चला जाती हैं। राजा की नौकरानी बनकर अनेक कष्टों को सहकर सुख प्राप्त करती हैं। राजा साहब की विक्षिप्त पत्नी की परिचर्या के लिये विवश होने के बावजूद भी घटनाचक्र ने उसके जीवन को इस प्रकार परिचालित किया कि वह स्वयं मनोरोग की शिकार हो गई ।

अंत में वह उसी स्थिति में पुनः घर लौट आती हैं। इस प्रकार शिवानी ने इस उपन्यास में एक सामाजिक कथा को पिरोया हैं। जिसमें खुसरों, राजा राजकमल सिंह, मालती आदि के मानसिक तनाव स्पष्ट हैं। यहाँ खुसरो ''मिस

1- गैंडा- शिवानी - पृ. 45

जोशी'' के पात्र के द्वारा शिक्षा प्राप्त नारी का नये रूप में विकास दिखाया हैं और साथ ही उसकी उलझनों को भी प्रस्तुत किया हैं।

नायिका का संघर्षमय जीवन हमें ग्लानि व सहानुभूति करवाता है।

मूल कथा के साथ ही नौकरानी मरियन और राजाजी के परिवार जनों की कथा जुड़ी हुई हैं जो क्षणिक कथा प्रवाह को अवरूद्ध करती हैं। इसमें यह बताया गया है कि नारी की सुन्दरता उसके लिए अधिक खतरनाक हैं जो अनायास ही कुशंका के कारण 'सौत' का स्वरूप ग्रहण कर सकती हैं।

विवर्त - (1984)

यह एक मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। जो वैवाहिक समस्या पर आधारित हैं। प्रस्तुत उपन्यास में शिवानी ने यह भी सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि मनुष्य केवल विधि के हाथ का खिलौना मात्र ही है। यह उपन्यास मानव जीवन की रहस्यमयता का एक विलक्षण पहलू प्रस्तुत करता हैं। हीरा की सात पुत्रियों में से ललिता डबल एम.ए. करके एक स्कूल की हेडमास्टरनी हैं किन्तु नियति के चक्र में फंस कर विवर्त की और खीची जाती हैं। वह एक ऐसे अनजान व्यक्ति से शादी कर लेती है जिसके बारे में वह कुछ भी नही जानती वह व्यक्ति उसे आश्वस्त करके परदेश चला जाता हैं। शुरू-शुरू में तो वह ललिता को पत्र भी लिखता हैं और उसे उपहार भी भेजता है फिर धीरे-धीरे यह सिलसिला खत्म हो जाता है। एक साल तक कोई सन्देश ना पाकर गरीब बाप सब कुछ बेचकर ललिता को लन्दन भेजते हैं उसके पति के पास वहाँ जाकर उसे पता चलता हैं कि वह तो पहले से ही शादीशुदा हैं और उसके बच्चे भी हैं। यह सब जानकर उसे साँप सूँध जाता हैं. पति ललिता का परिचय अपनी दूर की रिश्तेदार के रूप में करवा के घर से बाहर चला जाता है। ललिता लन्दन से एक निग्रो युवक की सहायता से वापस लौट आती हैं। शिवानी ने आर्थर और ललिता का चरित्र बड़े मनोवैज्ञानिक तरिके से चित्रित किया

हैं। इसमें भारतीय समाज की दुर्बलता का भी चित्रण प्रस्तुत किया हैं। इसमें भारतीय समाज में पाश्चात्य देशो के प्रति जो आकर्षण हैं और इसी आकर्षण के चलते लोग बिना जाँच-पड़ताल किये ही एक अनजान व्यक्ति के साथ विवाह जैसा जिन्दगी भर का सम्बन्ध जोड़ लेते है और फिर उसी का परिणाम उन्हे भूगतना पड़ता हैं लन्दन में भी काले गीरे का वर्ण विद्वेष चल रहा हैं।

आर्थर की अंधी माँ का वात्सल्य बड़े भावात्मक ढ़ंग से प्रस्तुत किया हैं।

महौब्बत - (1984)

महौब्बत एक लघु उपन्यास है जो 'आकष' के संलग्न छपा हुआ, बडा मार्मिक भावात्मक और मनोवैज्ञानिक उपन्यास हैं जिसमें एक नारी की मानसिक चेतना को जन्म दिया गया है। 'महौब्बत' किसका नाम है ? वह क्यो रखा गया हैं? इसके बारे में शिवानी ने स्वयं लिखा हैं - ''महौब्बत में यह खरे सोने की खोटी लीक में कहाँ तक अछुती रख पायी हूँ यह बताना मेरा काम नही हैं..... केवल एक नाम और बिरादरी को मैंने ज्यों का त्यो रहने दिया है-वह है महौब्बत। उसकी सूरमें से भरी उदासीन नीली आँखो से लेकर गोरे चेहरे की लुभावनी हँसी, मर्दाना पंजो की सशक्त तालियाँ..... लम्बी-लम्बी डगे भरता वह ऐसे झूमते दूलहे सा चलता जैसे कोई अलमस्त फिरंगी साड़ी पहने जा रहा हो। यही था महोब्बत। मैने ही नही बहुतों ने उसे देखा होगा फिर सुना वह नहीं रहा। उसकी बिरादरी के विचित्र नियमानुसार उसे बहत्तर घड़े पानी में नहला खटिया पर बिठाकर उसकी मिट्टी उठाई गई थी। कहा जाता है कि मरने पर वह अभिशप्त बिरादरी अपने महाप्रस्थानी पाथिक को मरदों के कन्धो पर ही विदा करते हैं जिससे वह अपनी विचित्र योनि में फिर जन्म न ले।''[1]

उक्त पात्र के आधार पर इस उपन्यास की रचना हुई है। बिन्दु ऐतिहासिक

---

1. आकष - शिवानी पृ- 109

व पुरातन चीजों की शौकिन है जिसके पिता डॉ.मनोहर बर्वे और सुविख्यात नर्तकि दामिनी के बीच अनमेल हैं। जिसके कारण दामिनी महिनों तक परदेश या बाहर रहती हैं। डॉ. मनोहर और उसके बीच प्रेम संबंध से दामिनी के साथ घर्षण होता हैं। इतिहास के प्रोफेसर बोबी बिन्दु के साथ अनैतिक संबंध रखता हैं। अन्त में उसे छोड़कर अपनी पत्नी और पुत्र के पास अपने वतन लौट जाता हैं। बिन्दु की अवैध सन्तान जिसे ड्राईवर अनवर एक बस्ती में छोड़ आता हैं वही हैं महौब्बत।

कथा के अंतर्गत एक माँ की ममता और पुत्र प्रेम व्यक्त हुआ हैं। अनमेल दंपति के परिवार का क्या दुश्परिणाम आता है इसे ही मुख्य रूप से लेखिका ने स्वष्ट करने की कोशिश की हैं। सोमनाथ के समृद्धिता और मन्दिर की भव्यता का भी सफल चित्रण है। समुद्र तट पर बार-बार चुम्बन, आलिंगन आदि के द्वारा रोमेन्टिक भाव को उत्पन्न किया हैं। कहानी वैयक्तिक और आंशिक आंचलिक कही जा सकती हैं।

पूतोंवाली – (1986)

'पूतोंवाली' अर्थात जिसके कई पुत्र हो। इस उपन्यास में ऐसी ही एक स्त्री का बड़ा ही मर्मान्तक चित्रण किया हैं। इस स्त्री के पाँच पुत्र हैं फिर भी वह अंतिम समय में निपूती जैसी रहती है। उसके पाँचो पुत्र अच्छे ओंहदों पर है फिर भी वे शहरी चकाचौध में अपनी वृद्ध और असहाय माँ को भूल जाते हैं।

इस उपन्यास के जरिये शिवानी यह कहना चाहती है कि तेजी से हमारे समाज में परिवर्तन आ रहा है उससे भौतिक उन्नति तो हो रही है लेकिन समाज में उतनी ही तेजी से मानवीय मूल्यों का क्षय भी हो रहा हैं। आज के आधूनिक समाज में अब खून के रिश्तो का भी कोई मूल्य नही रह गया है जो कि हमारी संस्कृति और सभ्यता का मूल आधार हैं।

शिवानी ने इस उपन्यास में उस समय के शिक्षण व शिक्षा प्रणाली बड़ो के

प्रति आदर भाव, मान-सम्मान, दोस्ती तथा पारिवारिक प्रेम और आधुनिक शिक्षण आदि की तुलना यहाँ प्रस्तुत की हैं।

पुत्र बड़े होकर यह भूल जाते हैं कि आज उन्होंने जो पदवी प्राप्त की है उसके पीछे माँ-बाप का ही हाथ है उन्होंने कितने कष्ट झेलकर उन्हें पढ़ाया लिखाया है। शादी होने के बाद आधुनिक युग की पत्नी के दास होकर रह जाते हैं और अपने माता-पिता की उपेक्षा करते हैं।

पाश्चात्य संस्कृति के अनुसरण के दुश्परिणामो को भी इस उपन्यास में चित्रित किया हैं।

सामाजिक मूल्यों का अधःपतन अवगत हैं इन्सान भौतिक सुख-सुविधाओं में इतना मग्न हो जाता हैं कि वह अपने नैतिक मूल्यों और भावनाओं को तिलांजली दे देता हैं।

स्वयंसिद्धा - (1987)

'स्वयंसिद्धा' एक नारी के संघर्ष की गाथा हैं ऐसा संघर्ष जो कि वह गलत फहमी की शिकार होकर करती है। माधवी का विवाह कौस्तुभ नामक सीधे-सादे व्यक्ति से होता हैं परन्तु राधिका नाम की लड़की माधवी से क्रूर परिहास कर बैठती हैं कि 'मैं तुम्हारी सौत हूँ' यही परिहास माधवी को उसके पति से अलग कर देता है। माधवी मेहनत करके सरकारी अफसर बन जाती हैं। फिर वह और ज्यादा अहंकारी हो जाती है। अंत में कौस्तुभ अपनी बेगुनाही का सबूत देकर मर जाता हैं। और स्वाभिमानी माधवी फिर से अकेली रह जाती हैं।

कस्तुरी मृग - (1987)

इससे एक पुरूष की मानसिक चेतना को उद्धृत किया है। यह एक पुरूष प्रधान मनोवैज्ञानिक कथा है। जिसमें बड़ी प्रतिकात्मक शैली में सामाजिक बंधन संगीतमय वातावरण तथा वेश्या द्वारा बरबाद हुए गृहस्थ जीवन को उद्घटित किया

हैं।

प्रस्तुत उपन्यास एक लघु उपन्यास है इस उपन्यास में एक पारिवारिक समस्या को चित्तित किया हैं। बड़े संगीतज्ञ और कला पारखी रायबहादुर इकबाल नारायण बली पतिव्रता पत्नी के बावजूद भी वेश्या राजेश्वरी बाई के कोठे पर ही डेरा डाल कर रहते थे। उन्होंने ना तो कभी पत्नी का ध्यान रखा और न ही अपने पुत्र का। पत्नी रात-दिन चिन्ता में घूल कर मर गई। जब कई साल बाद रायबहादुर लौटते है तो कुष्ठरोग से पिड़ित होते हैं। पुत्र उन्हें जबरन कुष्ठाश्रम में भेजता हैं लेकिन वो जाना नही चाहते हैं जाते समय पुत्र के आगे गिड़गिड़ाते हैं-''मुझे यही मरने दे नन्हें कहीं मत भेज। मैं जानता हुँ मैंने तेरे साथ अन्याय किया हैं।''[1]

और अंत में जब पुत्र के कोई असर नही होता है तो वे शाप देते हैं- ''भगवान करे तु भी कभी घर-गृहस्थी का सुख न भोंगे अंग-अंग मेंकिड़े पड़ें तेरे।''[2]

इस प्रकार इस शाप के कारण कनक से प्रेम होने पर भी वह गृहस्थी का सुख नही भोग पाता हैं। फिर नायक उस व्यक्ति की तलाश में निकलता हैं जिसकी वजह से उसका सब बर्बद हो गया। एक दिन उसे उस वेश्या का पता मिल जाता हैं वह उसे खत्म करने के इरादे से उसके कोठे पर जाता हैं वहाँ जाकर उसे पता चलता हैं कि भगवान ने तो पहले ही उसे उसके कर्मो कि सजा दे दी हैं वह अन्धी हो जाती हैं जब वह बाहर निकल रहा होता हैं तभी वह एक लड़की से टकराता हैं जिसकी सूरत हूबहू उससे मिलती थी यानि वो उसके बाप की नाजायज औलाद थी। वह तुरन्त वहाँ से भाग आता हैं।

प्रस्तुत उपन्यास में कस्तुरी मृग की तरह गंध की तलाश में भटकते एक

---

1. कस्तुरी मृग - शिवानी- पृ-28
2. वही - वही- पृ- 28

अपेक्षित पुत्र की कथा हैं जो व्यथित होकर जीवन यापन कर रहा हैं।

अतिथि – (1987)

इस उपन्यास में एक ऐसी स्त्री की कथा है जो भावुकता और परम्परा में जीने वाली स्त्री है लेकिन समय आने पर वह अपने स्वाभिमान की रक्षा करना भी अच्छी तरह से जानती हैं। शिवानी ने जया को एक प्रेरणा के रूप में चित्रित किया है जया उस नारी का प्रतिक है जो गुलामी की स्थिती में अपना जीवन बर्बाद कर रही हैं ऐसी स्त्रीयों क सर ऊँचा करके जीने की प्रेरणा देती हैं।

मंत्री माधवबाबू स्वयं अपनी पुत्रवधु पसन्द करके लाते हैं ताकि उनका बिगडा हुआ बेटा सुधर सके। ससुराल आने के बाद जया अपनी ननद जो कि स्वच्छन्द नशीली दवाओं की आदी है तथा सास की परेशानियाँ झेलती हैं।

ये सब तो वह शायद सहन भी कर लेती लेकिन पति भी अफीम गाँजे का आदि हैं और एक दिन जब उस पर चोरी का इल्जाम लगाया जाता है तो वह सहन नही कर पाती और घर छोड़कर मायके चली जाती हैं।

वहाँ जाकर वह अपनी पढ़ाई जारी रखती हैं और आई.ए.एस. में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होकर ख्याति अर्जित करती हैं। कलक्टर बनकर मसूरी में निर्जन स्थल पर चली जाती हैं। जहां उसे अपने स्नेहमयी ससूर की याद आती है। क्योंकि वह एक संस्कारी युवती है इसलिए वह अपने पति को भूल नही पाती हैं उसे कार्तिक की भी बहुत याद आती हैं।

एक दिन उसे मालती भाभी के आने की खबर मिलती हैं। मालती भाभी से जया हर तरह की बात कर लिया करती थी । उन दोनों के बीच सखी का रिश्ता बन गया था। जब जया को पता चलता है तो वह बहुत खुश होती है कि चलो उसका अकेलापन कुछ दिनों के लिए खत्म हो जायेगा इसलिए वह अकेले ही मालती भाभी को स्टेशन लेने जाती हैं। लेकिन उन्हें वहाँ ना पाकर निराश हो घर

लौट आती हैं।

घर आती है तो अतिथि के रूप में कार्तिक सोया हुआ मिलता हैं। इस उपन्यास में यह भी बताया गया हैं कि बड़ों के अधिक व्यस्त रहने पर तथा घर व बच्चों की ओर ध्यान ना देने का क्या दुश्परिणाम आता हैं यदि माता-पिता शुरू से ही बच्चों पर ध्यान दे उनके लिए समय निकाले तो बच्चों में निश्चय ही अच्छे संस्कार उत्पन्न हो सकते हैं।

कालिन्दी – (1994)

अन्ना नाम की किशोरी वधू को एक छोटे से दोष के कारण ससुराल वाले प्रताड़ित करते है। वह पन्द्रह वर्षीय किशोरी अपने मायके चली आती हैं गर्भभार के साथ। और फिर एक लड़की को जन्म देती हैं जिसका नाम कालिन्दी रखते हैं। अपनी माँ, मामा, मामी के लाड़ प्यार में बड़ी होकर कालिन्दी डॉक्टर बनी। कालिन्दी का विवाह एक डॉक्टर से तय हो जाता है परन्तु दहेज के लोभी ससुराल यक्ष को दुल्हन बनी कालिन्दी ने बारात सहित फेर दिया। कीलिन्दी शिवानी का सामाजिक उपन्यास हैं, जिसमें नारी संवेदना और उसकी नियति का यथार्थ चित्रण हैं जो मर्म को छूकर उसे उद्वलित कर देता हैं।

उपप्रेती – (1997)

लघु उपन्यास 'उपप्रेती' रमा नाम की लड़की को केन्द्र बना कर लिखा गया उपन्यास हैं। रमा की सौतेली माँ उसे बहुत दुःख देती हैं लेकिन सहनशील रमा अपने मौन से सबका दिल जीत लेती हैं। और एक दिन विवाह कर ससुराल चली जाती हैं। रमा काफी समय के बाद अपने पति का हृदय जीतने में सक्षम हो पाती हैं। लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी होती है उसका पति बारात की बस समेत गहरे खड्डे में गिर जाता हैं। रमा सन्यास लेकर तीर्थ चली जाती हैं। रमा अपनी वैधव्यपूर्ण जिन्दगी को साध्वी बनकर भोगती है फिर मृत्यु से आलिंगनबद्ध हो विलय

हो जाती हैं।

कहानियाँ

1. चील गाड़ी –

चील गाड़ी की कथावस्तु आत्मकथात्मक या संस्मरणात्मक शैली से लिखित हैं। ससुराल जाने के बाद भी रूग्ण मातृ-विहिन भाई की याद आती हैं। बचपन में जैट विमान को चील गाड़ी पुकारकर अचरज से दौड़ता हुआ भाई याद आता हैं। ''करिए छिमा'', पुष्पहार, अपराधी कौन, शपथ ये मनोवैज्ञानिक कहानियाँ हैं।

सती –

सती में एक ऐसे पात्र की अभिव्यंजना की हैं जो अपने वाक्चातुर्य से सबको ठग लेती हैं। यह एक सामाजिक कहानी हैं। संसार में स्त्रीयों के कई रूप होते हैं। स्त्रीयों के स्वभाव को तो बड़े-बड़े ऋषी मुनि भी नही समझ पाये हैं। सती में एक ऐसी ही पात्र की रचना कि हैं जो आदर्शमयी, वाक्चातुर्य एवम् अजोड़ अभिनय से रेल यात्रियों की सहानुभूति प्राप्त करके सभी को ठग कर नौ दो ग्यारह हो जाती हैं।

तोप –

स्वभाव और शरीर में 'तोप' उपमा धारण की हुई वैरोनिका का चरित्र भी लेखिका ने बड़े ही चातुर्य से किया हैं। ढ़लती हुई उम्र में भी तोप की रसिकता कम नही हुई है।

अपने सैनिटोरीयम में आश्रित राजेन्द्र और सैम्युअल जैसे गरीब किंतु प्रतिभा सम्पन्न नौजवान को अपनी उदारता प्रदर्शित करके जाल में फँसाकर ब्याह लेती हैं।

'करिए छिमा' –

यह शिवानी की उत्तम मनोवैज्ञानिक कृति है। जिसको पढ़कर एक अनपढ़ पतिता पर तरस आता है जो अपने अवैध शिशु की हत्या के लिए कटघरे में खड़ी

हैं। करिए छिमा की कहानी सेक्स की ओर बढ़ती हैं। इसमें प्राकृतिक वर्णन भी बहुत सुन्दर तरीके से किया गया हैं।

शपथ –

शपथ में शिवालिंग के आगे ली गई झुठी शपथ से कालिंदी भाभी की प्रेतछाया से शुभा की विवश जिन्दगी का निरूपण मनोवैज्ञानिकता का अद्‌भूत उदाहरण हैं।

पुष्पहार –

पुष्पहार कहानी के द्वारा भी झुठे समाज पर प्रकाश डाला हैं। लोकनेता लोगो की भलाई के लिए चाहे कितना भी करे किन्तु समाज में उनकी एक ही बुराई के कारण सारी अच्छाईयाँ खत्म हो जाती हैं और समाज उसे बुरी नजर से ही देखता हैं।

2. गैंडा –

शिवानी के इस लघु उपन्यास में दो कहानियाँ भी संकलित कि गई हैं। भीलनी और चलोगी चंद्रिका ?

भीलनी –

प्रस्तुत कहानी नारी प्रधान है। दो कश्मीरी बहनों में एक खुबसुरत और दूसरी श्मामवर्ण बदसुरत भद्‌दी एवं अनाकर्षक हैं। बड़ी बहन ने अपनी छोटी बहन के लिए अपने चरित्रहीन पति कें साथ स्वयं आत्महत्या की और पुलिस के बयान में एक काली भीलनी का बहाना बनाकर चल बसी। वास्तव उसने अपने पति के साथ अपनी सौन्दर्यवान बहन को ही रंगेहाथो पकडा था। यह एक मनोवैज्ञानिकता को उद्घाटित करती हुई कहानी हैं।

चलोगी चन्द्रिका –

इस कहानी में मार्मिक प्रसंगो का वर्णन इतने अच्छे तरिके से किया गया हैं

कि पढ़ने वाले को लगता हैं यह घटना उसके सामने ही घटित हूई हैं। चन्द्रवल्लभ और चन्द्रिका की अपनी वैयक्तिक विशिष्टता इसमें वर्णित की गई हैं।

चन्द्रवल्लभ पहाड़ के नियमानुसार भाभी की बहन को ब्याह नही सकता था किन्तु वही उसकी प्रियत्तमा हैं उसके बिना उसे अपना जीवन अधूरा मालूम देता हैं।

चन्द्रिका की शादी अन्यत्र कर दी जाती हैं। कुछ समय पश्चात चन्द्रवल्लभ की शादी भी हो जाती है। कई वर्षो बाद खुद विधुर हो जाने पर और चन्द्रिका के निःसंतान विधवा हो जाने पर उसे चन्द्रिका की याद सताती हैं क्यों कि वह उसे भुल नही पाया था। चन्द्रिका का सौन्दर्य उसे हमेशा अपने सामने ही दिखाई देता था।

वह चन्द्रिका को पत्र लिखकर उसे लेने जाता हैं। उसके घर जाने से पहले वह चन्द्रिका को छुपकर देखता है तो उसे अहसास होने लगता है कि जो चन्द्रिका उसकी प्रेमिका थी यह तो वह नहीं हैं उसका समस्त सौन्दर्य नष्ट हो चुका हैं। उसके सारे सपने बिखर जाते हैं और वह चन्द्रिका को लिए बगैर ही वापस चला जाता हैं।

3. स्वयं सिद्धा –

शिवानी का यह कहानी संग्रह अनुपम है। इसमें नारी के विभिन्न चरित्रों का वर्णन मिलता है। प्रत्येक कहानी अत्यन्त रूचिकर, भावपूर्ण और मर्मस्पर्शी है। इस कहानी संग्रह में चार कहानियाँ संकलित हैं। चारों ही कहानियाँ नारी चरित्र को लेकर लिखी गयी हैं इनका वर्णन भी अत्यन्त भावपूर्ण तरीके से किया गया है। स्वयं सिद्धा कहानी संकलन में शिवानी जी ने स्वाभिमानी नारी के चरित्र को बड़ी खुबसुरती से पेश किया हैं।

कहानी मनोवैज्ञानिक होने के साथ-साथ वैयक्तिता को लेकर भी चलता है।

शिवानी ने इसमें युगीन परिस्थिति को भी स्पष्ट किया हैं। उस युग में साधु

और जोगयों का बोलबाला था इसलिए इन सबका असर शिवानी के साहित्य मे आना स्वाभाविक ही हैं।

स्वयंसिद्धा और अपराजिता में मार्मिक अभिव्यजना के साथ स्वाभिमानी नारियों के चरित्र को स्पष्ट किया हैं तो दूसरी ओर सौत में एक सामाजिक कथा को पिरोया गया हैं। व्यक्ति जब अधिक विनम्र और दयालू हो जाता है तो उसका विपरित असर पड़ता हैं। इसी सत्य को दिखाया गया है। निर्वाण कहानी तथा अपराजिता में कई जगह साम्य देखने को मिलता है।

SMT. HANSA MEHTA LIBRARY M. S. University of Baroda

4. अपराधिनी –

इस कहानी संग्रह में शिवानी ने जेल की सलाखों के पीछे बन्द अपराधिनियों की मनःस्थिति को समझ कर उसे ही प्रस्तुत करने का एक सराहनीय प्रयास किया हैं। जिसे उन्होंने बड़े ही मार्मिक ढंग से पेश किया हैं।

इस संकलन में पाँच कहानियाँ हैं - जारे एकाकी, छिः मम्मी तुम गंदी हो, और साधो ऐ मुर्दन के गाँव, अलखभाई, चाँद। इन सभी कहानीयों में नारी के विभिन्न स्वरूपों को चित्रित किया हैं।

जारे एकाकी, साधो ऐ मुर्दन के गाँव तथा छिः मम्मी तुम गंदी हो तीनो ही कहानीयों में ज्यादातर खून के अपराध ही किये हैं। किसी ने अपने प्रेमी से मिलकर अपने पति की हत्या की हैं तो किसी ने अपने पुत्र को ही गला घोटकर मार दिया तो किसी ने डकैती जैसा जुर्म किया हैं।

अलख भाई, जिसमें सांस्कृतिक और धार्मिक प्रकृति के लोगो का वर्णन हैं। इस कहानी में दो ऐसी वैष्णवियों का वर्णन है जो तीन हत्यायें करने के पश्चात साध्वी जीवन ग्रहण कर प्रायश्चित करती हैं।

'चाँद' कहानी में सैक्स और स्वच्छंदतावाद दिखाई देता हैं।

5. रथ्या –

इस संकलन में 'रथ्या' उपन्यास के अपरिक्त पाँच अन्य कहानियाँ हैं। 'अपराधी कौन', तोप, और मधुयामिनी इन तीनों ही कहानियों की चर्चा 'मेरी प्रिय कहानियाँ' संग्रह में की गई हैं।

प्रतिशोध और 'मरण सागर पारे' कहानियों में से 'मरण सागर पारे' में शिवानीजी के जीवन के संस्मरण संकलित हैं।

इसमें सामाजिकता व मनोवैज्ञानिकता को चित्रित किया हैं। उनकी ननद की जिठानी का भावपूर्ण चित्रण 'मरण सागर पारे' में किया है जो अपना सब कुछ गवाँकर भी एक स्तम्भ की भाँति सबको सहारा देती हैं। पारिवारिक समस्या को लेने के कारण इसमें भावुकता का समावेश स्वतः ही आ गया हैं।

'प्रतिशोध' कहानी में एक गृहस्थ जीवन की समस्या को उभारा हैं। सौदामिनी अपने पति शंकर को अपने स्वाभिमानी और प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व सें हमेशा पराजित करती रहती हैं। लेकिन शंकर भी अपनी चोटी के द्वारा सौदामिनी को नीचा दिखाता रहता हैं।

सौदामिनी के संयमित आचरण के कारण शंकर की शारीरिक इच्छाऐं पूर्ण नहीं हो पाती है और वह एक किशोरी का उपभोग करता हैं।

जब उसे पता चलता है कि वह गर्भवती है तो वह उसे छोड़ कर चला जाता हैं।

जब सौदामिनी को इस बात का पता चलता है तो वह शंकर से प्रतिशोध लेती है उसकी चोटी काटकर फेंक देती हैं जिस पर शंकर को बहुत अभिमान था। इस कहानी में नये पुराने आदर्शो, परम्पराओं, संस्कारों आदि का द्वंद्व दिखाया हैं।

6. कैंजा –

इस संकलन में 'कैंजा' लघु उपन्यास के अतिरिक्त सात मर्मस्पर्शी कहानियाँ

हैं। गृहस्थ जीवन की समस्या को भिक्षुणी के माध्यम निरूपित किया हैं।

'मौसी' एक मनोवैज्ञानिक कहानी हैं जिसमें नारी की त्याग भानवा का बड़ा मार्मिक चित्रण किया है ''ज्यूडिस से जयंती' में नये पुराने आदर्शो के कारण वैयक्तिक तनाव देखने को मिलता हैं।

परिवार कि समस्या को भी चित्रित किया है।'अनाथ' कहानी में समाज के झुठे समाज सेवकों और उद्धारकों पर कटाक्ष किया गया हैं। 'भूल' में व्यक्तिगत समस्या को उभारा है। 'मामाजी' कहानी हृदय के अन्दर तक मर्म पहुँचाने वाली कहानी हैं। जो पहले सामाजिकता की ओर होती हुई यथार्थवाद की ओर चली जाती हैं इसमें गरीब की मानसिक स्थिति का चित्रण किया हैं।

7. माणिक –

इस संकलन में 'माणिक' लघु उपन्यास के अतिरिक्त अन्य दो लम्बी कहानियाँ हैं।

(1) तर्पण, (2) जोकर

'तर्पण' कहानी में नायिका का संघर्षमय जीवन प्रस्तुत किया हैं। तेरह वर्ष की उम्र में ही उसके साथ एक व्यक्ति उसका सबकुछ लूट लेता हैं इस बात को उसकी माँ सहन नही कर पाती हैं वह उसी रात चल बसती हैं। पिता भी दूसरे दिन आत्महत्या कर लेते हैं। एक बार वही व्यक्ति जिसने पुष्पा का सर्वनाश किया था मन्त्री बनकर उसी गाँव में फिर से आता हैं। उसे देखकर पुष्पा पन्त को पिछली सारी स्मृतियाँ तीखे भाले की तरह कोंचने लगती हैं।

और वह उस व्यक्ति की हत्या करके अपने माँ-बाप का तर्पण करती हैं।

'जोकर' एक मनोवैज्ञानिक कहानी हैं। सुखी और वैभव सम्पन्न माँ की आंतरिक वेदना का चित्रण किया हैं। जो अपनी मर्जी से ना हँस सकती हैं और ना रो सकती हैं। जोकर जो वास्तविक जीवन में कितना दुखी होता हैं लेकिन फिर

हँसहँस कर लोगों का मनोरंजन करता हैं। कहानी मार्मिक व यथार्थता से परिपूर्ण हैं।

8. पूतोंवाली –

इस संकलन में 'पूतोंवाली' और 'बदला' दो लघु उहन्यास हैं। इसके अतिरिक्त तीन अन्य कहानियाँ हैं। 'श्राप', लिखूँ और 'मेरा भाई' इन तीनों में ही नवीन कथानक को लिया गया हैं।

'श्राप' कहानी में माता-पिता अपनी सुन्दरी और गुणवान बेटी की शादी एक अमीर घराने में कर देते है। पहले तो वे दहेज नहीं माँगते है बाद में उनकी पुत्री की जलाकर हत्या कर देते हैं। इस बात का ना कोई सबूत था ना साक्षी अंत में श्राप के लावा और कोई चारा नही रहता। कहानी में अनमेल विवाह का दुष्परिणाम भी दिखाया गया है।

'लिखु' कहानी मार्मिक और मनोवैज्ञानिक है पूरी कहानी भावात्मक रूप से दो सखियों के प्रेम को लेकर आगे बढ़ती हैं। कथानक नवीन हैं। कहानी नारी प्रधान होने के साथ-साथ आंशिक रोमेंटिक कही जा सकती हैं। अपनी अन्तरंग सखी जिसे मिलने को वह वर्षो से तडप रही थी। एक ऐसे मोड़ पर मिलती है उसे बाँहो में भर कर प्यार भी नहीं कर पाती हैं। क्यों कि उसकी सखी अब जातिय परिवर्तन से लड़का बन गयी थी। यहाँ आधुनिक युग की ओर कहानी हमको ले जाती हैं। ''मेरा भाई'' इस कहानी में भाई और बहन के प्रेम को दर्शाया गया हैं।

भाई चाहे कैसा भी हो बहन उसे याद किये बगैर नही रह सकती। लेखिका अपने पड़ौस में रहने वाले लड़के को भाई बनाती हैं। कई साल बाद लेखिका जब रेलगाड़ी में सफर कर रही थी तो एक चोर उसका सारा सामान चुराकर जा रहा था। लेखिका के गिड़गिड़ाने पर वह उसका पासपोर्ट वापस करते समय फोटो देखकर अपनी बहन को पहचान लेता है और सारा सामान वापस करके और चूराया

हुआ बटुआ भी वहीं डालकर शीघ्रता से वापस लौट जाता हैं। कहानी में यथार्थ सत्य हैं कि जब सगा भाई भी आज के जमाने में चोर और डकैत बन सकता हैं तो फिर ये तो धर्म भाई था।

संस्मरण व रेखाचित्र :

1. झरोखा	2. दरीचा	3. वातायन
4. झूला	5. गवाक्ष	6. जालक
7. यात्रिक	8. आकष	9. चरैवती
10. कस्तुरी मृग	11. आमोदर शांतिनिकेतन	12. चार दिन की

1. झरोखा –

इस संकलन में कुल 25 संस्मरण हैं। ''बांधीश ना आर मायार डोरे'' में पति के साथ बितायें गये पलों को व्यक्त किया गया हैं। इस संस्मरण में खट्टी-मिठ्ठी स्मृतियाँ जो कि उनके अतीत से जुड़ी हुई हैं।

'सत्यजीत रे' संस्मरण के अन्तर्गत उनके साथ बिताये गये मधुर क्षण और सत्जीत रे की फिल्मों के बारे में भी चर्चा की गई हैं।

'संयुक्त ा पाणिग्रही' और ''भिंजना अंचरता तोहार'' में प्रसिद्ध संगीतज्ञों और नृत्यांगनाओं के संस्मरण हैं। 'मैत्री का हाथ', 'ओ रे गृहवासी', 'जन्मदिन' 'सिर फुडवा लो', ये बुढे शेर', खूंखार आया', 'वैभव प्रदर्शन', 'ट्रेन डकैतियाँ', आदि सभी संस्मरण दृश्य परख संस्मरण हैं।

इन संस्मरणो को पढ़ने के बाद हमारे सामने सभी दृश्य एक के बाद सजीव होते रहते हैं।

'परिवार नियोजन', 'औलाद और घोड़ा', 'मुखौटा' आदि रचनाएँ प्रतिकात्मक हैं। प्रतिकों द्वारा समाज में जो लोग मुखौटा पहनकर रहते हैं अर्थात जिनकी कथनी और करनी में अन्तर होता हैं वे कभी किसी का हित नही देखते

हमेशा अपना ही फायदा देखते हैं।

2. दरीचा –

इस संकलन में शिवानी जी के कुछ विशिष्ट संस्मरण संकलित हैं जिसमें उन्होंने अपने विचार सुदृढ़ रूप से पेश किये हैं। इस संग्रह में कुछ व्यक्ति परख संस्मरण भी शामिल किये गये है जिनमें हिन्दी के श्री भगवती प्रसाद बाजपेयी, बंगाली भाषा के कवि नजरूल और जनार्दन कवि श्री सुमित्रानंदन पंत, प्रसिद्ध गायिका-बेगम अख्तर, विख्यात नृत्यकार रूक्मिणी देवी आदि प्रसिद्ध व्यक्तियों को शामिल किया गया हैं।

शिवानी ने उपन्यास एवम् कहानियों की भाँति संस्मरण लेखन में भी विशिष्टता अर्जित की हैं।

उनकी इस विशिष्ट शैली को देखकर ही श्री सुमित्रा नंदन पंत ने कहा था- ''तुम अधिक से अधिक संस्मरण लिखा करो, प्रत्येक चरित्र में तुम्हारी कमल प्राण फूँककर उसे जीवन्त कर देती हैं।''[1]

''रेपसीड ओयल'', '' रैगिंग'', ''प्राचीन मुनि कश्चप'', तथा होली दिपावली के त्यौहार जैसे अनेक प्रतिकात्मक संस्मरण उन्होंने लिखे हैं।

इन्कमटेक्ष चुराने वालों तथा सूद लेने वालों पर भी शिवानी ने तीखा व्यंग्य किया हैं।

सरकार, जनता, मंत्रिगण तथा पार्वती के जन्म की कथा भी 'शिवपूराण' से लेकर प्रस्तुत की हैं। शिवानी अपने प्रतीकात्मक निब्नधों से यह उद्धृत करना चाहती हैं हमें आपस में भाई-चारे से रहना चाहिए अपने संस्कारों को हमें अपनी जीवन शैली में प्रवेश देना चाहिए।

इसके अतिरिक्त दीर्घजीवन वार्धक्य, नारी के वार्धक्य के दो रूप जैसे

1- दरीचा- शिवानी- पृ-2

अग्निगर्भा और मात्स्यपूर्ण आदि का स्तंभ लेखन भी सराहनीय हैं।

शिवानी ने इस संकलन में अनेक विशिष्ट संस्मरणों को शामिल किया है और यही वजह हैं कि यह संकलन 'दरीचा' अनुपम और विशिष्ट बन गया हैं।

3. वातायन –

वातायन अर्थात् हवा के प्रवेश करने का रास्ता या खिड़की जिससे हम बाहर का जीवन देख सकते हैं लेकिन शिवानी ने यहाँ वातायन को एक ऐसी खिड़की के रूप में पेश किया हैं जो हमें जीवन और जगत् की सच्ची और हृदय में प्रवेश कर लेने वाली मार्मिक तस्वीरे दिखाती हैं। मनुष्य के अन्तर्मन में हजारों तरह के द्वन्द्व चलते रहते हैं जिन्हे वह समझ नही पाता हैं। यह वातायन मनुष्य के अन्तर्मन में प्रवेश कर उन गुत्थियों को सुलझाने का काम करता हैं। 'वातायन' के द्वारा हम अपने झरोखे से बैठकर देखते रहेंगे तब हमारी आँखों के आगे से अनेक दृश्य चलचित्र की भाँति गुजरने लगते हैं। विभिन्न घटनाऐं और तरह-तरह के लोग हमें दिखाई देने लगते हैं।

चकमकती मोटरो में बैठकर अच्छे होटलो में डिनर खाते लोग और एक दाने के लिए मोहताज भिखारी। ऐसे ही ना जाने कितने अनुभव हमें रोज होते हैं। ऊँचे अधिकारी जब अपने पद से रिटायर हो जाते हैं तो समाज में उनकी कोई अहमियत नही रह जाती हैं। छोटे-छोटे अधिकारियों के हाथों प्रताड़ना सहन करनी पड़ती हैं। मृत पति की पेंशन लेने के लिए एक महिला को बार-बार लालफीताशाही का सामना करना पड़ता हैं। ये सब अनुभव शिवानी ने अपने संस्मरण 'वातायन' में उद्घाटित किये हैं।

''आज जहाँ हमने अपने सभ्य जीवन को अनेक नवीन उपलब्धियों से समृद्ध किया हैं, वही अपनी संस्कृति की अनेक पुरातन उपलब्धियाँ गवाँ भी दी हैं।''[1]

---

1. वातायन -शिवानी- पृ- 31

इस संग्रह में कुल 33 रेखाचित्र व संस्मरण हैं। अधिकांश रेखाचित्र ही हैं।

मानवता, नारी का स्थान, गरीबी, महंगाई, नैतिकता, मद्यपान आदि रेखाचित्र प्रतीकात्मक ढंग से प्रस्तुत किये हैं। जो नारी वैदिक युग में देवी की तरह पूजी जाती थी वह आज सौंदर्य स्पर्धा में अपनी मर्यादा, विनय, शील आदि गवाँ चुकी हैं।

इस प्रकार शिवानी जी ने अनेत पहलूओं पर रेखाचित्र लिखे हैं। और संस्मरण भी प्रस्तुत किये हैं।

4. गवाक्ष - (1975)

इस संग्रह में कुल 21 संस्मरण एवं निबंध संग्रहित हैं। संस्कृति; भाषा, कला, अभिनय यात्रा तथा सामाजिक समस्याओं आदि पर स्तंभ लेखन लिखने का सफल प्रयास शिवानी ने किया हैं। शिवानी ने अपने संस्मरणों में जो कुछ भी लिखा वह सचाई पर आधारित हैं। और इसी वजह से इन्हें अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ा। इनके शब्दों में-'अपने ही गवाक्ष के सीमित औदार्य से जितना कुछ मैंने देखा और जिसने मुझे झकझोरा उन्ही घटनाओं को ईमानदारी से लिपिबद्ध करने की चेष्टा में, मै कहां तक सफल रही हूँ यह मैं नहीं कह सकती किंतु कभी कभी मुँह फट लेखनी के दुःसाहस ने मुझे संकट में डाला अवश्य हैं। ''[1]

'गवाक्ष' में घृतक्रिडा में सब कुछ हार कर अपनी सुन्दरी युवा पत्नी को दाव में हारने वाले जुआरी, भूत प्रेत की हवेली में लेखिका के प्रत्यक्ष अनुभव, सरोजिनी के साथ बीती घड़ीयाँ एवम् पिता की हत्या करने वाली निर्दोष अपराधिनी, ठग की विद्या में चतुरा नारी आदि के संस्मरण चित्रित हैं।

लेखिका के स्फुट विचार बड़े गहन यथार्थ और दार्शनिक हैं।

'गवाक्ष' में एक अनोखा दृश्य परख बृहन्नलाओं की मुलाकात भी हैं।

1- गवाक्ष- शिवानी- प्राक्कथन

शिवानी के अनुसार नारी जीवन की सार्थकता केवल पुरूष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलने में ही नही है बल्कि कन्धे का सहारा लेने में भी हैं।

5. ''झुला''–

इस संग्रह में शिवानी ने बड़े ही रोचक संस्मरण व रेखाचित लिखे हैं। इसमें लेखिका ने संगीतज्ञो और साहित्यकारों के संबंध में लिखा हैं तथा दूसरी ओर जीवन में घटित होने वाली समस्याओं को भी एक नये दृष्टिकोण से पेश किया हैं। इस संग्रह में 17 संस्मरण एवं रेखाचित्र हैं। लखनऊ में आयोजित अनेक संगीतकारों के कार्यक्रम, राई नृत्य, नैतिक एवम् आध्यात्मिक दृष्टि; दहेज तथा पथभ्रष्ट छात्रों के लिए लखनऊ दूरदर्शन से प्रसारित कार्यक्रम आदि के विषय में शिवानी ने संस्मरण एवं रेखाचित्र लिखे हैं। वैयक्तिक रेखाचित्र तथा दृश्य परख संस्मरणों का चित्रण भी बड़ी रोचकता से किया हैं।

6. जालक –(1979)

इस संकलन में सभी संस्मरण निजी हैं। कुल 27 संस्मरण व रेखाचित्र इस संग्रह में हैं। इस संग्रह में शिवानी ने अपने संस्मरणों में समाज व्यवस्था, सरकार, पास पड़ौसी आदि को स्थान दिया हैं। शिवानी ने आम जीवन के प्रसंगो को 'जालक' के माध्यम से एक सांस्कृतिक तथा स्थायी मूल्य देकर साहित्य के इतिहास में अमर बना दिया।

श्रीमति घोष की डकैती, सर्वप्रथम डाक्टर बनी महिला आनंदी, लखनऊ की यात्रा के दौरान कुंअर साहब से मुलाकात सम्राट अशोक का प्रिय 'मोर का गोश्त' खाने का आग्रह, सुस्वाद भोजन जैसे व्यक्ति परख संस्मरण हैं।

पुलिस और गुनाहगार, नाटू जैसे गुरू आदि के संस्मरण हैं। नैमिषारण्य की महत्ता, सौन्दर्य आदि के बारे में भी रोचक संस्मरण हैं।

महाबलीपुरम, मद्रास का पर्यटन, वहाँ के लोग मातृभाषा की प्रियता आदि

दृश्यपरख वर्णन शिवानी ने किये हैं।

सत्तारूढ़ आदमी,आतंरिक असमानता, स्वार्थ, आधुनिक चीजों के प्रति लगाव आदि बातों पर भी अनेक कटाक्ष एवं रोचक प्रतिकात्मक संस्मरण लिखे हैं।

7. यात्रिक –(1981)

बहुत से लोग देश-विदेश की यात्राऐं करते हैं फिर उन यात्राओं के अनुभव लोगों सुनाते हैं या उन्हें लिख लेते हैं शिवानी ने भी अपनी यात्रा के रोचक प्रसंगो को संस्मरण के रूप में पेश किया हैं। 'यात्रिक' में शिवानी ने संस्मरण, रेखाचित्र, तथारस को जीवंत मूर्तिमान किया हैं।

इसमें विदेशी वातावरण में परिवर्तित भारतीय रीति रिवाज की मनोरंजन झांकी प्रस्तुत की हैं। विदेशी भूमि पर देशी रंगढंग का ब्याह कराने शिवानी अपने पुल की बाराक लेकर इंग्लैंड गई। इस अनुठी यात्रा में उन्होंने जो देखा-परखा, अनुभव किया उसे वृतान्त का रूप दे दिया हैं। यह एक अनुपम यात्रावृत्त है अतः यात्रा का वर्णन अधिकतम है और कई जगह पर व्यक्ति विशेष की छाप हैं इसके अतिरिक्त दृश्यात्मक अधिक हैं।

8. चरैवति –(1987)

इस संस्मरण में रूस यात्रा का रोचक वृत्तांत हैं, लेकिन इसका मूल उद्देश्य देश में मानवता भाईचारे और आपसी समझ, सद्‌भाव की प्रेरणा देना हैं। चरैवति अर्थात् निरन्तर चलते चले जाना। जहाँ कहीं भी जाये वहीं से मिले ज्ञान से अपना कोष भरते जाना। ज्ञान एक ऐसा स्रोत है जो कभी नहीं सूखता हैं यही संदेश शिवानी ने 'चरैवति' में दिया हैं।

मोस्को के बाद साईबेरिया की यात्रा बेहद दिलचस्प और ज्ञानवर्द्धक हैं। इसमें रूसी लोगों के आचार व्यवहार, उनके रहन-सहन तथा प्रसिद्ध स्थलों और नैसर्गिक सौंदर्य का सरस कथात्मक वर्णन हैं। इन सबके अतिरिक्त प्रसिद्ध महिला

और पुरूषों के जीवंत रेखाचित्र भी हैं।

'चरेवति' में मोस्को के हवाई अड्डे से लेकर भारत लौटने तक के संस्मरण प्रस्तुत हैं।

इस प्रकार यह दृश्य परख संस्मरण हैं।

9. कस्तुरी मृग – (1987)

'कस्तुरी मृग' लघु उपन्यास हैं। इसके अतिरिक्त इसमें 'भूलभूलैया' से संकलित अनेक रचनाएँ एवं संस्मरण हैं। जीवन में हमारे साथ कई ऐसी घटनाएँ घटित होती हैं जो हमारे लिए समस्या बन जाती हैं। इसी यथार्थ को शिवानी ने यहाँ चित्तित किया हैं।

अब धीरे-धीरे मनुष्य के आचार-विचार, मनोवृत्तियों में परिवर्तन आता जा रहा हैं। प्रकृति में परिवर्तन आ रहा हैं। जाडे की ऋतु, बर्फ और शीत की झाँकिया दृश्य परख संस्मरण हैं। एक संस्मरण में पगली युवती के द्वारा पुरूष की लोलुपता को दर्शाया हैं। लंदन में भारतीय मिष्ठान अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। यह भी लेखिका ने उद्घाघाटित किया हैं।

आज के अतिसुविधा वादी समाज की यह विडम्बना हैं कि जिस अपराधी ने 16 हत्याएँ की हैं ऐसे अपराधी को भी मनोवैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर खुला छोड़ दिया जाता हैं। विवाह की अनिवार्यता आदि के विचार भी इस संकलन में संग्रहित हैं। लंदन में किसी की मौत हो जाने पर भारत की तरह आत्मीयता से शव को ले जाने की इजाजत नही हैं। इसके लिए भी रिजर्वेशन होता हैं।

छात्रावास की वार्डन फ्रेंच युवती का व्यक्तिपरख संस्मरण भी शिवानी ने लिखा हैं।

10. आकष – (1984)

आकष संग्रह में संस्मरण, रेखाचित्र एवं ललित निबंध संग्रहित हैं। इस संग्रह

में कुल 17 रचनाएँ हैं। सर्वप्रथम कृष्णकुमार श्रीवास्तव द्वारा शिवानीजी के साथ बातचीत की प्रस्तुति हैं।

भाषा, आंचलिक उपन्यास, भारतीय संस्कृति आदि के बारे में प्रश्नोत्तरी हैं। लंदन यात्रा अन्य कथाकारों के लिए अपने विचार प्रस्तुत किये हैं। इस संकलन में ललित निबंध के अंतर्गत 'भ्रष्टाचार' 'जापान की समृद्धि का रहस्य', 'नारी ही नारी की शत्रु' साहित्य क्षेत्र में महिलाएँ, 'कुरूष्व मुनि शार्दुल' तथा 'माँ चिरजीवनम्' आदि को समाविष्ट किया हैं। इन सब में शिवानी के निजी अनुभव की छाप अधिक हैं। वैयक्तिक रेखाचित्र भी प्रस्तुत किये हैं।

बम्बई नगरी की रौनक तथा खोखलापन दोनों क ही दिखाया हैं।

शिवानी ने सहृदय होकर तथा भावनाओं के वशीभूत 'नन्ही-नन्ही बुंदिया रे सावन का मेरा झूलना' तथा 'आसान हैं माँ का ऋण चुकाना', जैसे संस्मरण भी लिखे हैं।

11. आमादेर शांतिनिकेतन – (1986)

यह एक उत्कृष्ट संग्रह हैं। इसमें कुल 15 संस्मरण हैं गुरूपल्ली, आश्रम के पर्व, आश्रम के विकास में गुरूदेव का योग, अनेक विभूतियों का आगमन, गुरूदेव की आत्मीयता आदि। शिवानी ने इस संग्रह में अपनी कुशल लेखनी के द्वारा इस संस्था शांतिनिकेतन की मनोहारी छवी प्रस्तुत की हैं। 'गुरूपल्ली' में गुरूओं का छात्रों के प्रति वात्सल्य तथा छात्रों का आदरभाव प्रस्तुत किया हैं।

शांतिनिकेतन में मनाये जाने वाले अनेक उत्सव एवम् पर्वो आदि के दृश्य हैं। गुरूदेव के उदार स्वभाव का वर्णन तथा गुरूदेव की मृत्यु का प्रसंग भी अनुपम और प्रभावोत्पादक हैं। इन संस्मरणों को पढ़ने से इनके जीवंत चलचित्र हमारे सामने उजागर हो जाते हैं।

12. चार दिन की – (1978)

इस संकलन में कुल 15 संस्मरण व रेखाचित्र हैं। प्रस्तुत संकलन कुछ पूर्व – प्रकाशित रेखाचित्र हैं। 'स्वप्न और सत्य' में स्वप्न में घटी घटना ही वास्तविकता का रूप लेती हैं।

'चंदन', 'ललीता', 'कालू', 'चार दिन की', आमि के बनलता', 'डॉ. खजानचन्द', और 'तुई जे पुरूष मानुष' आदि व्यक्तिगत संस्मरणात्मक रेखाचित्र हैं। 'चंदन ' शिवानी का नौकर था और 'ललिता' उनकी नौकरानी की लड़की थी।

'चन्दन' में बालसहज भावनाएं व प्रवृत्ति, पारिवारिक एकात्मकता व स्वामीभक्ति बतलायी गयी हैं। 'ललिता' में ग्रामीण स्त्री की यथार्थता तथा बुन्देलखण्डी रीति रिवाजों का वर्णन किया गया हैं। ''तुई जे पुरूष मानष'' मे शिवानी ने यह बतलाने का प्रयास किया हैं कि बालक को बचपन से ही जिस प्रकार के साँचे में ढालना हो वैसा ढ़ाल सकते हैं। 'कीर्तिस्तंभ' में एक अभिशप्त कीर्ति का वर्णन हैं। 'आपबीती' शिवानी का नीजी संस्मरण हैं। 'चार दिन की' और 'दानामिया' में भावात्मकता, पारिवारिक एकात्मकता और धर्मनिरपेक्षता के चित्र प्रस्तुत किये हैं। 'कालू' संस्मरणात्मक, दृश्यात्मक तथा कथात्मक शैली में लिखित हैं।

'भूली कहाँ हूँ' में आचार्य श्री हजारी प्रसाद द्विवेदी जैसे श्रेष्ठ वात्सल्यमूर्ति शिक्षक का वर्णन हैं।

बाल साहित्य –

1. स्वामी भक्त चूहा 2. राधिका सुन्दरी 3. भूत अंकल
4. आईस्क्रीम महल 5. हर-हर गंगे 6. बचपन की याद
7. अलविदा

1. स्वामीभक्त चूहा – (1961) (तीसरा सं.)

इस संग्रह में (1) स्वामिभक्त चूहा (2) मक्कार कौआ (3) कौआ और

तीतर (4) लोमड़ी और घुघुती तथा राज के धनि में धनि, ये पाँच छोटी-छोटी कहानियाँ प्रस्तुत की हैं।

अधिकांश कहानियों में पशु व पक्षी का प्रतिक रूप में प्रस्तुत किया गया हैं।

मनोवैज्ञानिक रूप से देखा जाये तो यह कहानियाँ विशेष तौर पर 7 से 12 साल के बच्चों के लिए लिखी गई हैं।

'स्वामीभक्त चुहा' के द्वारा उपकार की महत्ता को दर्शाया गया हैं।

'कौआ और तीतर' में कौए और तीतर के प्रतीक द्वारा यह बतलाया गया हैं कि बुरे काम का फल बुरा ही मिलता हैं।

'लोमड़ी और घुघुती', कहानी के द्वारा दोस्ती में कोई भेदभाव नही होता हैं बताया हैं। 'राज के धनि', मैं धनि', राजा प्रतिमदेव को अपने धन-वैभव पर बहुत गर्व था किन्तु एक दिन एक छोटी सी चिड़ियाँ ने उसका घमण्ड तोड़दिया और अपने घमण्ड के लिए राजा को अपनी नाक कटवानी पड़ी। इस संग्रह की सभी कगानियाँ बच्चों के लिए ज्ञानवर्धक व मनोरंजक हैं।

2. राधिका सुन्दरी – (1981)

इस संग्रह में 'राधिका सुन्दरी' 'चालाक लोमड़ी और भालू' 'बुद्धिमान बकरी' 'बिल्ली और मूसारानी' 'घमण्डी हाथी और बुद्धिमान चूहा', तथा 'पिद्दी और हाथी' कहानियाँ संग्रहित हैं।

'राधिका सुन्दरी' कहानी में यह बतलाया गया हैं कि नीच व्यक्ति का ओछापन छुप नही सकता वह कभी ना कभी तो दिखाई दे ही जाता हैं।

'चालाक लोमड़ी और भालू'- में लेखिका ने बताया हैं कि कभी अपने मित्र को धोखा नही देना चाहिए। हमे हमेशा अच्छे लोगो के साथ ही मित्रता करनी चाहिए।

'बुद्धिमान बकरी' में स्नेहशील वमिलनसार स्वभाव की ओर संकेत किया हैं

क्यों कि व्यवहार यदि अच्छा होगा तो किसी का भी दिल आसानी से जीता जा सकता हैं। यही ज्ञान लेखिका ने बच्चों को दिया हैं इस कहानी के माध्यम से।

'घमण्डी हाथी और बुद्धिमान चूहा' इस में बताया हैं कि घमण्डी को हमेशा मूँह की खानी पड़ती हैं और बुद्धिमान व्यक्ति चाहे वह ताकत में कम हो लेकिन बुद्धि के द्वारा ताकतवर दुश्मन को भी पराजित कर सकता हैं। 'बिल्ली और मुसारानी' में बिल्ली के पुत्र की मुसारानी से शादी की बात हैं। इसमें बिल्ली यह योजना चुहों का शिकार करने के लिए बनाती हैं। पर चौकन्ने चूहे भाग जाते हैं।

'पिद्दी और हाथी' इस कहानी में भी पहले वाली अभिमान की बात को दोहराया गया हैं। इस कहानी में हाथी अपनी मस्ती और अभिमान में चूर होकर छोटी पिद्दी के छोटे-छोटे बच्चों को पेड़ सहित उखाड़ कर कुचल देता हैं। लेकिन पिद्दी भी बाद में इसका बदला लेती हैं इससे यह पता चलता हैं कि चाहे कितना भी छोटा जीव हो यदि उसे सताया जायेगा तो वह भी बदला लेगा।

संदर्भ सूची

1. शिवानी के उपन्यासों का रचना विधान-कु. शशीबाला पंजाबी-पृ.2

2. जालक-शिवानी-पृ.123

3. वहीं-वहीं पृ.132

3. साहित्य अमृत-महेश दर्पण-पृ.34

4. मेरी प्रिय कहानियाँ-भूमिका आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी।

5. जालक-शिवानी-पृ-151

6. नवभारत टाइम्स- 15-6-93 पृ.4

7. व्यक्ति चेतना और स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी उपन्यास-डॉ. पुरूषोत्तम दुबे

8. कैंजा-शिवानी -प्रकाशक के वात्तव्य से आवरण पृष्ठ पर

9. वही-वही-पृ.14

10. वही-वही-पृ.58

11. वही-वही-पृ.62

12. कृष्णकली-शिवानी-लेखकीय वक्तव्य से।

13. वही-वही-पृ.55

14. भैरवी-शिवानी-पृ.117

15. रतिविलाप-शिवानी-पृ.32

16. वही-वही-पृ.17

17. रथ्या-शिवानी-पृ.85

18. वही-वही-आवरण पृष्ठ से

19. माणिक-शिवानी-पृ.28

20. कृष्णवेणी-शिवानी-पृ.23

21. गैंडा-शिवानी-पृ.37
22. वही-वही-पृ.24
23. वही-वही-पृ.22
24. वही-वही-पृ.34
25. वही-वही-पृ.45
26. आकष-शिवानी-पृ.109
27. कस्तुरी मृग-शिवानी-पृ.28
28. वही-वही-पृ.28
29. दरिचा-शिवानी-पृ.2
30. वातायन-शिवानी-पृ.31
31. गवाक्ष-शिवानी-प्राक्कथन